बाट एकपेरिया

कविता-संग्रह

कामेश्वर झा 'कमल'

बाट एकपेरिया

(कविता संग्रह)

कवि

श्री कामेश्वर झा 'कमल'

ज्ञानदीप प्रकाशन

आदर्श नगर, मधुबनी

प्रकाशक :
ज्ञानदीप प्रकाशन
आदर्श नगर, मधुबनी
मिथिला, बिहार
पिन – 847 211
फोन – 95764 00107

© : कविक अधीन

प्रथम संस्करण : 2015 इस्वी

दाम : 120 टाका

मुद्रक :
दुर्गेश झा
युनिक प्रिंटर्स
आदर्श नगर, मधुबनी
मिथिला, बिहार
पिन – 847 211
फोन – 80831 22104

BAAT EKPERIYA : A Collection of Maithili Poems by
Sri KAMESHWAR JHA 'KAMAL'

समर्पण

श्रद्धेय स्व0 पूज्य पिताः
दयानन्द झा
तथा
श्रद्धेय स्व0 पुज्या माता
गुलाब देवीक
चरण कमल मे
सादर समर्पित
जिनक नेह, दुलार, आशीर्वाद
आ देल संस्कारसँ
हमर जिनगीक डेग
निर्विघ्न बढ़इत जा रहल अछि।

— कामेश्वर झा 'कमल'

दुइ शब्द

हमरा सभ भारत वर्षक एक तेहन क्षेत्र मे जन्म लेने छी, जकर नाम मिथिला कहल जाइत छइक। लगभग 4 (चारि) कोटि सँ वेशी बहुजातिक आवादी वाला क्षेत्र चारू कात गाछी–विरछी, पोखरि–झाँखरि, कमला, कोशी, गंडक, करेह, भुतही, वागमति आ गंगा इत्यादि बहुत नदी सँ सिंचित, समतल उर्वर भूमि, पान, मखान आ माछ सँ प्रसिद्ध क्षेत्र, हिमालयक कोखि मे अवस्थित, जकरा हमर पूर्वज लोकनि जे भूतल पर दोसर स्वर्ग कहि गेलाह अछि, ई सत्य साबित करैछ। एहि मे कोनो अतिशयोक्ति नहि। ई हमरा लोकनियेटा नहि, समस्त भारतवर्षक आन क्षेत्र आ विश्व जनइत अछि जे एहिठामक माटि–पानि, अनुपम रीति–रेबाज, मान–मर्यादा, लोक कला, संस्कृति, भाषा आ साहित्यक समृद्धि सनातनी सँ छइक आ एखनो धरि विद्यमान छइक। मिथिला लोक कला, संस्कृति–संस्कार सँ प्रभावित भ' समस्त भारत वर्षक आन क्षेत्र आ विश्वक कतेको देश एकर अनुशरण कयलक आ अपन भाषा, लोक संस्कृति, साहित्य के संपुष्ट कयलक। भारत वर्ष मे मूर्त्त कंकाल मे प्राण प्रतिष्ठा मिथिले सँ भेल, किएक तँ एहि माटिक धिया, शक्तिक प्रतीक सीता नारी आदर्शक प्रतिमूर्ति छलीह, एखनो धरि छथि आ भविष्यो मे रहतीह। ई गौरव मिथिलेक क्षेत्र टाक भेटल छइक।

आब प्रश्न उठइ छइक जे जखन मिथिला क्षेत्र एतेक व्यापक क्षेत्र मे पसरल, शिक्षा, लोक कला संस्कृति संस्कार सँ परिपूर्ण, स्वर्ग समान समतल उर्वर भूमिक एहन मान प्रतिष्ठा विश्व प्रसिद्ध छलइक आ ऐखनो धरि छइक तँ एखन अपन पहचानक लेल कियैक संघर्षरत अछि ? कियैक बाट मे पिछड़ि गेल ? कारण की छलैक आ छइक ? एहि प्रश्नक मूल बात हमरा जनइत दू टा बात अछि, एक तँ यवनक आक्रमण सँ एकर संस्कार पर बहुत किछु असर पड़ल, दोसर ई अपन ज्ञान–विज्ञान, लौकिक–अलौकिक विद्या दान दोसरो क्षेत्रक लोक के अपन नैतिक कर्त्तव्य बुझि देलक। दोसराक लेल अपंन ज्ञान दान देबाक क्रम मे कदाचित अपन समसामयिक पीढ़ी कँ कतहु ने कतहु बिसरि गेल। जकर कारण भेल जे ओ पीढ़ी अपन पुरखाक कमायल यश, धन, मान, मर्यादा कँ बिसरि बैस कए भजाबय लागल आ निठल्ला बनल बैस के खाय लागल। सतर्कताक विपरीत लापरवाह बनल पड़ल रहल। परिणाम, वर्त्तमान मे समक्ष अछि। आन क्षेत्रक लोक, छल कपट सँ हमर ज्ञानक चोरि कय अपन छद्म नाम सँ अपना क्षेत्रक विकास कयलक आ समृद्ध भेल हमरा सभहक उपकार बिसरि गेल, हमरे एखन अपमान करय लागल अछि।

कहबी छइक जे– "दीप जरयलहुँ हमहि सगरे, हमरहि घर अन्हार।
जकरा ऑगुर ध' बाट चलेलहुँ, बिसरि गेलै उपकार।।"

हम प्रायः 32 (बत्तीस) वरख सँ एक स्वयंसेवी संस्था सँ जुड़ल छी। हमरा भारत वर्षक प्रायः बहुत ठाम जेबाक अवसर भेटल अछि, हमरा प्रवासी यायावरी जिनगी मे सभ ठामक सभ तरहक रीति–रेवाज, लोक कला संस्कृति देखबाक अवसर भेटल अछि। हमरा एक बातक बड़ा छगुन्ता लागल जखन ओ सभ अपन मातृभाषा सँ राष्ट्रभाषाक संग कोनो समझौता नहि केलक आ ने कय रहल अछि। अपन मातृभाषा मे ओ बाहरी लोक संग बात करइक लेल चेष्टा करइत अछि, ओकर भाषाक दबाब सँ दबल हमरा लोकनि अनमोने सही प्रचार–प्रसार कय रहल छी। जखन कि ओ हमरे भाषाक नकल कऽ अपभ्रंश शब्दक जाल बुनि अपन बोल बजइत अछि।

अपन भाषाक, लोक संस्कृतिक संस्कार रामायण महिमा मंडित त्रेतायुग सँ पहिने सँ मानल जाइत अछि, जखन कि संस्कृत कँ छोड़ि कोनहु आर्यभाषा हमरा सँ नवीने छैक।

एहि लोक सभहक अपन भाषा, क्षेत्रीयताक प्रति अनुराग देखि, हमरहु कतहु ने कतहु अपन भाषा, क्षेत्रीयताक प्रति अनुराग हृदय मे जगौलक अछि। मैथिलीक बनइवला पोखरा–पाटनक विशाल महल मे हमहुँ दोखराक एक कण समान अपना के उपस्थिति दर्ज करबय चाहैत छी। जे मजगूत दू पजेबाक मध्य गारा मे मिलल रहय आ महल के मजगूत बनाबय मे सहायक रहय। कोनो मनुक्ख जखन जाहि माटि पर जनम लइत छइक तँ ओकरा माथ पर कइएकटा ऋणक बोझ स्वतः लदा जाइत छइक जेना मातृ–पितृ ऋण, समाजक ऋण, माटि–पानिक ऋण, गामक ऋण, राज्यक ऋण, देशक ऋण आदि–आदि। एक शिशु कँ चाहे ओ कोनो जातिक कियैक ने हो समाजक प्रत्येक जातिक लोकक ओकरा अलौकिक आशीर्वाद स्वतः भेट जाइत छइक, ई ऋण हमरा जनइत सातो जनम जौं कियो जन्म लेत तऽ उद्धार नहि भ' सकैत अछि। ओ नेह, दुलार, मलार अपनत्वक भावना अतुलनीय होइछ। प्रत्येक मनुक्ख कँ बालिग भेलाक पश्चात् एहि अनमोल ऋण सँ उऋण हेबाक लेल यथासाध्य अपन माटि–पानिक लेल उपयोगी कार्य सँ समृद्ध करबाक जबाबदेही रहइत छइक। एहि नैतिक उत्तरदायित्व कँ जे बुझइछ, कदाचित सैह व्यक्ति यथासंभव उऋण भ' पबइछ। हमहुँ अपन नैतिक उत्तरदायित्व कँबुझि साहित्य सृजन मे लागि माटि–पानिक प्रति श्रद्धा आ नेह रखइत अपन प्रथम कविता संग्रह ''बाट एकपेरिया'' प्रस्तुत कय रहल छी।

ओना हम कोनो पैघ कवि आकि साहित्यकार अपना कँ नहि बुझइत छी, मुदा वर्त्तमान मे यथायोग्य मैथिलीक सेवा मे अपना कँ समर्पित मैथिल वृंदक सभ जातिक लेल एक चुनौती पूर्ण समय आयल अछि तकर प्रतिवाद, प्रतिकार आर विकासक लेल समस्त मैथिल वृंद के सतत तैयार रहक चाही। ताहि रूप मे हमर ई कविता संग्रह अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत अछि। कविताक शीर्षक चयन करबाक हमर ई आशय अछि जे जेना टम–टम गाड़ी मे जोतल घोड़ाक दहिना–वामा भाग अढ़ कय देल जाइछ आ मात्र ओकरा अपन लक्ष्य दिस एक ताल मे चलइक लेल प्रेरित कयल जाइछ। ताहि रूप मे हम अपन कविता संग्रह के शीर्षक नाम दय प्रतिरूपित कयल अछि।

हम प्रायः बाइस साल सँ बेसी सँ कोलकाता प्रवास मे छी। एहि मध्य हमरा सहजहि एहिठामक श्रद्धेय, नामी–गामी, माटि–पानि अनुरागी, साहित्यकार, पत्रकार, कवि, नाट्यकार आ जिम्मेदार मैथिली अनुरागी लोकनि सँ संपर्क भेल, जाहि मे हम अपना के कपरगर बुझइत छी जे ओ लोकनि अपन साहित्य सृजनशीलता मे हमरो अपन आंगुर धरा बाट चलेबाक अथक प्रयास कयलन्हि। जाहि मे श्रद्धेय श्री राजनंदन लाल दास जी, श्रद्धेय श्री किशोरी कान्त मिश्रजी, श्रद्धेय श्री रामलोचन ठाकुर जी, श्रद्धेय प्रो0 श्री शंकर झाजीक संग–संग आर अनेको श्रद्धेय लोकनिक असीम नेह, आशीर्वाद हमरा भेटल, हम अभिभूत हिनका लोकनिक सदा ऋणी रहब। समसामयिक बहुतो चिन्हार–अनचिन्हार कवि, पत्रकार, साहित्यकार, नाट्यकारक संग–संग हम श्री गंगा झाजी, श्री अशोक झा, श्री नवोनारायण मिश्र, श्री लक्ष्मण झा 'सागर', श्री अंजय चौधरी, श्री विनय भूषण ठाकुर, श्री मिथिलेश कुमार झा, श्री अनमोल झा एवं श्री आमोद झाक प्रति कृतज्ञता आ आभार प्रकट करैत छी जे सतत हमरा उत्साहित करइत रहैत छथि। विशेष कऽ के श्री मिथिलेश कुमार झाक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करइत छी जे हुनक अथक परिश्रम सँ हमर ई पोथी छपिकए अपने लोकनिक हाथ मे दऽ रहल छी।

अन्त मे समस्त मैथिली पाठक, सुधी वृंद पर पोथीक उचित समीक्षा, निर्णयक लेल छोड़इत आशा करइत छी, हुनक सटीक प्रतिक्रिया हमरा भविष्य मे प्रोत्साहित करइत रहत। एहि आशा विश्वासक संग जय मैथिल, जय मिथिला, जय मैथिली !

तिथि :–

कामेश्वर झा 'कमल'

कविता–क्रम

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
1.	संस्कृति	1
2.	आशा	2
3.	ओ पारिजात गाछ	3
4.	दुनियाँ के देखिऔ	6
5.	अमृत–आसव	7
6.	सुनू सुनाउ अप्पन बात	8
7.	चुनावी दंगल	9
8.	बुझल छइ बुचिया के	10
9.	सत्य मे हम एक अपंगिनि छी	11
10.	आकर्षण	12
11.	गृहस्थी	12
12.	छहरदेवालीक पाछु	13
13.	समरभूमि मे रणचण्डी बनि जायब	16
14.	हम बाट ताकब	18
15.	आपसी कलह (द्वन्द)	20
16.	विडंबना	21
17.	अलनीनो	23
18.	रक्तबीज	25
19.	पाकड़ि गाछ	27
20.	प्रलयंकारी केदारनाथ	31
21.	तरहत्थी मे अदिष्ट	33
22.	बाट एकपेरिया	34
23.	अमर रहतइ दिन पंद्रह अगस्त	36
24.	महा अभिशाप (एक श्रद्धांजली)	37
25.	हे मेघ बरिसु	38

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
26.	शहर स बढ़िक' गाम	40
27.	फूल हमर नाओं	42
28.	तकइ छइ हमर बाट गाम	43
29.	एलइ फेर जनमारा जाइ	44
30.	कोना कऽ हम घिचबइ हर	45
31.	दियादिक डंस	46
32.	खरातक प्रतिदान	48
33.	प्रदूषण	49
34.	आजुक आधुनिकताक बहइत वसात मे	50
35.	एतय लुटेरे टा स्वतंत्र छइ	52
36.	उपराग	54
37.	राष्ट्रीय कार्यक्रम (मनरेगा)	56
38.	अनमोल वर	57
39.	बाबन हत्था बड़का दलान	59
40.	गै महगी भाग	61
41.	वैष्णोदेवीक ढबकल नयना (2014)	62
42.	सुनि बसंतक नाम	64
43.	ऋतुराज बसंतक अभिनंदन	65
44.	बसंतक ऋतु आबि गेल	67
45.	बाप-पुरखाक नाम पर	68
46.	मनुक्खताइ	69
47.	हमरा देशक नेता	70
48.	आउ बंधु गाबि गीत	71
49.	सुलभ आन्दोलन	72

1 संस्कृति

आपस निज देश,
जाइक क्रम मे,
एक अंगरेज,
हमरा लग आयल छल,
झुकाओने गरदनि,
जोड़ने दुनु हाथ,
सम्मानार्थ,
पहिरा देलक निज टोपी
हमरे माथ।
हमरा मन मे
तखनहि किछु
हलचल सन भेल छल
पश्चात् संस्कृतिक
संस्कारक संचार
मन मे संचरित,
होमय लागल छल,
बदला मे धोतीक
याचना कयने छल ओ,
वाम आँखिक सह पाबि,
तखनहि ओ हमर
खोलि धोती,
झट–पट ओढ़ि लेने छल
तनिक कनडेराय कें
फराके सँ
पुनः हमरा दिस तकने छल
व्यंगात्मक रूपें,
वामा हाथक बुढ़बा आँगुर
डोला देने छल,
हम बुझलहुँ
जनौलक पुनः कृतज्ञता
लग मे भेलइ धाख, तें....
दूरहि सँ
औपचारिकता निमाहलक अछि।
पहिरने अंगरेजबा टोप,
देखलक लोक,
लगलइ सेहन्ता/छगुन्ता,
धयलक हमर पछोड़
हम बुझल
बढ़ि गेल हमर व्यक्तित्व
घार हमर अनेरे तना गेल,
अभिमाने उच्च।
उच्चे घारे हठात्
लागल छल ठेस,
खसल रहि
चारू नाल चित्त भेल ,
टोपी माथ सँ
फराक भेलाक प चात
घाड़ तखनहि भेल छल नीच।
अकस्मात् मोन पड़ल तखनहि,
अंगरेजबाक
बुढ़बा आँगुरक औपचारिकता
आ अपन
धोती संस्कृति।

2 आशा

आशा!
हो ने
निराशा,
जटिल प्रश्न
लाख अनुत्तरित
अटल प्रबल
जिज्ञासा! .....

कंटक. पथ पग
पंक भुजंग हो
रिपुदल निकट निवासा,
भय विमुक्त हो
शैल वक्ष हो,
वाणी सत्य अहिंसा .....

लक्ष्य सदा
हो निर्धारित
आलस्य नाम हताशा,
कर्मण्येवाधिकारास्त .....
सत्यमेव..... परिभाषा .....

धरम सँ उच्च
हो मानवता
हो ने तनिक अंदेशा,
मातृ–भूमि प्रति हो नतमस्क
मातृ मधुर मातृभाषा .....
आशा हो न
हो ने निराशा .....।

3 ओ पारिजात गाछ

प्राचीन मानव
सभ्यताक
प्रवर्तक
स्वाभिमान सँ
उच्च मस्तक,
ब्रह्माण्डक
मार्गद कि
हृष्ट–पुष्ट
पल्लवित
पूर्ण कलेवर ल'
चतरल छलइ
एकटा गाछ।
जकर डारि–डारि पर
चहकइत, फुदकइत
कलरब करइत
छलइ
चिड़इ चुन्नमुन्नी
पंचम स्वर मे–
गबइत छलहु
कोकिल
जकर गीत पर
एक दिन
मुग्ध भ'–
नाचि उठल छलाह
स्वयं–
कैलाशपति।
जतय छलइ
विश्राम करइत
ओहि गाछक
छाहरि तऽर
एके संगहि निर्भय
हिंसारहित
बाघ–हरिण
जकर
फूलक सौरभ सँ
गम–गम
करइत रहइ
चहुँदिसि
वसात
अपन हद सँ
बहार
दोसरोक
अंगना घर कैँ
कहियो
गम–गमा देने छलइ
ओ पारिजात
गाछ।
गाछक डारिक
निवासी
गौरवे आन्हर
मात्र
उपभोग टा
करइत
रहि गेल
पुरखाक
संपत्ति बुझि
कर्त्तव्य सँ
मूह
मोड़इत गेल
बिनु खाद–पानि कैँ
एका–एक
रोग–ग्रस्त
भ'–उठल
ओ गाछ,
लागय लागल रहइ
ओकर जड़ि मे

घुन,
सुखाय/अलसाय
लागल रहइ
ओकर
समस्त डारि–पात
मात्र
फुनगी पर बाँचल
किछु हरियर
कोमल पात ।
गाछ लेबय लागल छल
अंतिम साँस
गाछक निवासी
ओहि
अवस्था मे
छोड़ि ओकरा
अपन
ताकय लागल छल
दोसर ठेकाना
धयलक
प्रवासक बाट
जे कहियो–
लेने–रहय
स्वयं कें
सिंगारि
सुन्न भ' गेलइ
डारि–डारि
असहाय सन
बेसुध रहि गेल
असगरे
ओ गाछ ।
प्रवासक
प्रताड़ना सँ
प्रताड़ित
सभ कें
हुअए लागल
जखन अपमान
तखन
सभ निवासी कें
मोन पड़य लागल छल
अपन लोक,
संस्कृति
भाशाक
मान
आ
चतरल
रोग ग्रस्त
ओ
झमटगर गाछ।
जकरा
भगवान भरोसे
छोड़ि कहियो
ओ सभ–
आयल छल
प्रवास।
अधिमिरूत गाछक
फुनगी पर
वाँचल कइएकटा
हरियर पात
जकरा
अपना हद सँ–
बहार
अनका अंगना
प्रवास सँ–
मारय लागल
पानिक छिंटका
ताहु मे

एक दोसरक मध्य
होमय लागल
प्रतियोगिता
मुदा
ककरो नहि
फुरसति
देखइत
ओहि गाछक
अवस्था
यथा
सटीक उपचार
खाद–पानिक
व्यवस्था
सभ अपना मे
लटपटायल
ककरो
गाछक
कोनो नहि चिंता
एकेटा कथित सेहन्ता
गाछक
फुनगी परहक पातक
रखबाक अछि
सदिखन हरियर
टटका देखेबाक अछि
आनो–आन अंगनाक
लोक कें
हमरो अछि
अपन भाशा
घर–दुआरि
चारू चौहद्दी
प्राचीन सभ्यता।

4 दुनियाँ के देखियौ

यौ मैथिल, दुनियाँ कें देखियौ,
जे नहि देखलक कहियो लाइ
से सभ खाइ अछि आइ मिठाइ,
जकरा कहियो कियो ने पुछलक,
तकर होइत अछि आइ बड़ाइ।

यौ मैथिल, अन्हेर ई देखियौ!
छलइ ने जकरा घर घराड़ी
तकरा महल अनगिनत बखारी,
ढोंढ़िया फेंफ विषहीन दाँत सँ
डसि कए लेलक अछि हिस्सेदारी ।

यौ मैथिल तन्द्रा निज भंगियौ!
पुरखा धन तस्कर ल' भागल
आबहु चेतू जे अछि बाँचल,
सहस्र बरखक सम्पदा धरोहर
सगर जगत मे अहिंक पसरल।

यौ मैथिल तनिक अहाँ सोचियौ।
एक सय पूत सवा सय नाती
तनिका घर की दीया ने बाती ?
शब्द कोश में नाम प्रवासी
करइछ विदीर्ण नहि अहाँक छाती ?

यौ मैथिल आब मोन मे ठनियौ !
मान मर्यादा भाषाक रक्षा,
लोक संस्कृति अपन पतक्खा
उठाउ गांडीव चढ़ाउ प्रत्यंचा
क्षणहि मारब वैरी अलक्षा।
यौ मैथिल दुनियाँ के देखियौ–
यौ मैथिल तनिक अहाँ सोचियौ।

5 अमृत–आसव

सुरूजक मारल अगिन बाण,
प्रतिघात बसातक कतेक सहल,
तप्तधरा कहय त्राहिमाम्
तन झूर झमान मन कुहरि उठल।
विरहिनि एकसरि एकटक,
रूसल मनमीत, पुकारि उठल,
ब्याकुल चातकी पिहुँ–पिहुँ,
एक रट चित्कारि उठल।

देखि मरूस्थल रूप धनि,
नील गगन तम तमा उठल,
सुरुज ताप निज छाँह झाँपि,
बिजुरि कटारि चमचमा उठल।

प्रियतमा बिछोह ब्याकुल अंबर
मन–मौन हिया घड़ घड़ा उठल
नील नयन कारी नीरद
नयन कोर झड़ झड़ा उठल।

नभ भावुक अति भारी लोचन
छल अपनहि लय मे बरखि रहल,
प्रियतमा धरा केर दामन मे
छल बुन्नक मोती उझलि रहल।

अली अधर चंचल मुस्की
स्वर कजरी राग गुनगुना उठल
मन–मीतक उपर निछावर
रस यौवन तन सँ रिझा रहल।

गगन धरा दुहु आलिंगन
तन एकाकार कसमसा उठल
अतृप्त धरा तन–मन तिरपित
नवांकुर गर्भ किलकिला उठल।

इ जल बुन्नी नहि अमृत बुन्न
अनवरत जीव मुख पिआ' रहल,
इ जड़–चेतन केर संजीवन
अमरित आसव दय जिया रहल।

6 सुनू सुनाउ अप्पन बात

सून सुनाउ अप्पन बात
नव सदी मे नव शुरूआत
आउ नेहक दीप जराबी
हो आलोकित चारूकात।.....
सून सुनाउ अप्पन बात।
बिरबा एक हमरा सन रोपब
सींचब नीर यथोचित खाद
नव भविष्य कें हम संवारब
जिनगीक देब अचल बुनियाद
नव वातास किसलय कें देबइ
मह–मह गम–गम स्वच्छ वसात।
सून सुनाउ अप्पन बात।
बिसरब हम सभ बात पिछुलका
करबइ एक दोसरक बिसबास
ऊँच–नीच केर भेद मेटेबइ
नव सदी मे नव इतिहास
चारि हाथ सशक्त बनेबइ
कियो ने पुछतइ ककरो जात
सून सुनाउ अप्पन बात।
एक हाथ मे बाइबिल रहतइ
एक हाथ मे पवित्र कुरान
एक हाथ मे ग्रंथ गुरूवाणी
एक हाथ मे वेद–पुराण
बाँटि सकय नहि द्रोही चुगला
राजनितिक शतरंज विसात।
सून सुनाउ अप्पन बात।
बड़ा दिन होली बैसाखी
ईद मिलन मे घाड़ा जोरि
नाचब गायब खुशी मनाएब
एक संग मिलि हाथा जोरि
अंगने–अंगने बेन जे बिलहब
नवका रीत मधुर सौगात।
सून सुनाउ अप्पन बात।
नव सदी मे नव शुरूआत।।

7 चुनावी दंगल (2014)

दंगल देखु, देखु दंगल
एम्हर दंगल, ओम्हर दंगल
जेम्हरे देखु तेम्हरे दंगल
बिगुल बजइते, पाँच बरख पर
मचल देश मे चुनावी दंगल।

मल्ल सबहक जुटान अखाड़ा
ताल ठोकय सभ दइ ललकारा
अपनहि मे सभ लड़इ जे कुश्ती
उकटा पैंची गुत्थम गुत्थी
सामाजिक सभ बंधन चनकल..... ।।

सत्ताधारी महा समुंदर
भ्रष्टाचारक उठल बबंडर
दल बदलू बेँगबा सभ टर–टर
भागल उम्हरे जहतर–पहतर
डबरा, खत्ता, खुत्ती जंगल..... ।।

जोतखी पंडित घर–घर जमघट
हस्त लकीर देखाबय धरकट
राहु केतु भानि ग्रह सभ संकट
टकहि मे तागति मेटाबय झंझट
यजमानक हो मंगल–मंगल..... ।।।

हमरहि कुलक सभ बेटा–पोता
एकहि सेहन्ता बनय ओ नेता
जड़य–मरय बुड़िबक बरू जनता
हमरहि कुल केर रहय जे सत्ता
जातिक नाम पर जनगण सनकल..... ।।।।

8 बुझल छइ बुचिया के.....

बुझल छइ बुचिया कें
ओझहोके कहने हेतैक ओ,
हमर लाचारी
मायक बिमारी
भायक बेरोजगारी,
बुझल छइ बुचिया कें.....

साकिन भेल सभ खेत पथारी,
बाँचल मे मात्र
एकेटा–घराड़ी
महाजनक पैंच, उधारी
बुझल छइ बुचिया कें.....

चिनवारक बंधक
राखल–माटि
बस्तु जात लोटा आ थारी
ठाठक गानल कोरो आ वाती
बुझल छइ बुचिया कें.....

भरिसक ओझहो
बुझि गेल होथि
सासुरक लाचारी
आ हठ ठानल
वर विदाइ लेल
रूसल
अपन मोनक बे बिचारी !

9 सत्य मे हम एक अपंगिनि छी

हमरा जनम पर माथ धुनइ छी, बेटी बुझि कँ मूंह दुसइ छी,
बेटा भेल तँ नचाबी नटुआ, हमरा जनम बेरो' ने टेकइ छी।

शिक्षित करब बात बड़ दूरक, चुल्हि तरमे देह जरबइ छी,
रीति कुरीति काटर अनटोटल, हमरहि सिर सभ लादि देने छी।

मर्यादाक गरदामी सँ, माल जेकाँ खुटेसि देने छी,
तइयो जस मुदा नहि हमरा, सदा प्रताड़ना सहइत रहइ छी।

वक्ष भरल क्षीर मृदु धारा, ममता रूप हमर कमजोरी,
मुदा जखन हम चोटा जायब तँ, काली रूप करब बरजोरी।

मोन मे अछि लालसा अनेको, नीलाकश मे उड़ी सदा हम,
सिंधु अथाह हिमगिरि मस्तक पर, सतत गर्व सँ राज करी हम।

हमरो तन मे अछि ओ बुत्ता, पुरुश सँ आगू डेग बढ़ायब,
जे कोनो बैरी सिंहक बच्चा, तकर दोबर शक्ति देखायब।

जौं किछु बाजू, बड़े बजइ छी, जौं नहिं बाजू, बौक बुझइ छी,
कहइक लेल हम एक अर्द्धांगिनि छी, सत्य मे हम एक अपंगिनि छी।

10 आकर्षण

संकल्प कयल,
किछु करब
शपथ खयलहुँ आइ
मिथिलाक लेल
मैथिली मे किछु लिखब,
कोरा कागत–कलम
रातिक, दोसर प्रहरक क्षण
सिहरइत आ लटपटाइत सन
डिबियाक इजोत
हमर मोन कतहु
बौआइत अछि,
कोनो बस्तु खोजबा मे
हठात्
पाछू अहि सँ
केहुनीक चोट लागल
पाँजर मे,
एक बेर/दोसर बेर
पुनः
तेसर बेर
हम थकमकः जाइत छी
हमर एकाग्रता
भंग भ' गेल अछि
ओ उठि बैसलि
मात्र हमरे
हमरे निहारि रहलीह अछि
मंद, मृदु मुस्कान,
नयन,
किछु बेचैन सन
मौन,
किछु चाहइत छथि
कहैक लेल
हमरा सँ,
सात फेरा
ककरा सँ ?
कलम सँ कि–
हमरा सँ !
हम हड़बड़ा जाइत छी,
कलम
कागत पर खसि पड़ल,
खने हुनका निंहारि
खने कलम कें
कश मशा गेल अछि
हमर मोन,
गरम साँस
हमरा मोन कें
करेज कें
हिलोरने जा रहल अछि
अकस्मात्
दुनु हाथ
हुनक गाल पर
चल गेल
आ ताकय लगलहु हम,
ओहि मे,
अपन विषय वस्तु
एकाग्रता सँ हम,
समरसता मे
निमग्न भ
गेलहु
कोरा कागत
कलमक रोशनाई
सोखि लेने छल।

11 गृहस्थी

बुच्चीबाबू,
आइ छथि
उदास, हतास, बेबस।
गाम सँ आयल छनि पाती,
लिखने छथिन्ह
गाम अयबाक लेल गृहिणी,
एहि साओन,
भदबरिया मास मे,
मरइया खसले बुझब
अगुआर–पछुआर
चारुदिसक दाबा
गेल अछि भसइक,
वेलाइग भेल
झूलि रहल अछि खाम्ह,
टाट–फरकी, खुट्टा
नहि जानि
कोन दिन–प्रहर मे,
दइब योग सँ
पुरिबा–पछबरिया
वसातक झोंक मे,
मरइया,
केम्हर सँ केम्हर खसत,
केम्हर उनटत
के कहलक अछि ?
एकसरि नारि,
अबोध बउआ
तीनटा कन्या कुमारि,
गठियाक मारल बूढ़ी
सठिआयल बुढ़ा
सामाजिक
बन्हन–मर्यादा
अहाँ सभटा जनिते छी
हम कतेक बेबश छी!
ओम्हर,
उफनइत कमला,
खखोरि–खखोरि,
खयने जा रहल
दुनु बान्हक
करेज कँ
केम्हर भासत,
के बाँचत
किछु कहल
नहि जा सकइछ
विषम परिस्थिति मे,
हमर करेज
भालड़ि भेल
काँपि रहल अछि
की करब
किछु नहि
फुरा रहल अछि
निपत्ता आँखिक
नोर–निन्न
अपग्रह मे पड़ल परान
कनसोह लइत
बाढ़िक विभीषिकाक सदिखन
दिवा–रात्रि कान
अपने मे लटपटायल
गाम–टोलक लोक
ककरा फुरसति छइ
के अनका
देखइ सूनइ छइ ?
लिखब–कहब तेँ हम
अहिं कँ
अपन लाचारी

खगता–बेगरता
कुल बाँचत तँ
चाकरीक लेल विधाता
जनम भरिक लिखने छथि
दोसरक दासता
जहिना दिल्ली–पंजाब
तहिना कोलकाता।
पातीक
एक–एक आखर
बुच्ची बाबूक
करेज–कप्पार पर
चोट मारि रहल छन्हि
बज्राघात सन
ओ गेल छथि ओझराय
अपनहि मे लटपटाय।
पाती के उन्टबइत,
पुनः छथि पढ़इत
क्रम छनि लागल
एक नहि
कइएक बेर
असमंजस मे पड़ल
हतोत्साह
की करताह
की नहि करताह,
चाकरी करताह
की गाम जेताह !
परदेशक यायावरी जिनगी
गरीबीक मारल–झमारल
आसमान छुबइत महगी,
महाजनक सूदि–मूरि सँ
तऽर
घड़ीक सेकेण्डक सुइयाक
चालि जकाँ
बढ़इत नित
तनयाक वयस
कतहु के
नहि छोड़लकन्हि अछि ?
एक–एकटा पाइ जोड़इक लेल
दासो दास बनल
चौबीसो घन्टा
अकारणे
मालिकक सुनइ छथि
फज्जति
अनटोटल कथा
वास्तविकता जनइत
ओ पूछि लेने छलइन्ह
देबा काल चाकरी
नाम/गाम/ठाम
गृहस्थीक अवस्था
सम्पूर्ण पता

12 छहरदेबालीक पाछू

छहरदेबालीक पाछू
एक नयन,
कानल सन,
रेबाजक बंन्हन मे,
खुटेसल आँगन मे,
मोन मे दबल
कतेको आशा,
अभिलाषा,
आकांक्षा।
छहरदेबालीक पाछू
एक नयन
बान्हलसन।
उड़बाक लेल तत्पर
पाँखि मुदा कतरल
तइयो,
छटपटाइत,
फरफड़ाइत
नंघबालय
लक्ष्मण रेखा।
छहरदेबालीक पाछू
एक नयन
आतुर सन।
तोड़बाक लेल बेड़ी,
परतंत्रताक
अभिलाषी स्वतंत्रताक
करबालय मुहठी मे
क्षिति
क्षितिज
अंतरिक्ष
छहरदेबालीक पाछू
एक नयन
व्याकुल सन।

13 समरभूमि मे रणचण्डी बनि जायब

हम चललहुँ हे प्रिय समर भूमि,
भाल पर विजय तिलक लगायब,
अछि बाँहि आइ किछु फरकि रहल,
हमर तरूआरि लय आयब।

बैरी हेरि रहल मम मातृभूमि,
हद पर अछि नुकाकय,
तनिको जौं ओ सह पाओत,
बइसल अछि घात लगाकय,
चुगला अछि बैसल,
कतेको बाट–घाट,
परोक्षहि सँ,
तकरो तँ अछि पता लगाएब।। अछि बाँहि.....
मरण समान गुलाम जिनगी,
देखल इतिहासक पृष्ठ उनटाकय,
भेटत सम्मान संघर्षहि सँ,
सभ सर्वस्व अपन लुटाकय,
मम जन्म भूमिक रहल हाक,
मोह मे,
जनि आँखिक नोर बहायब।। अछि बाँहि.....
शक्ति बिनु शिव छथिये अधूरे,
पार्थिव बनल अचल मृतप्राय,
शिव बिनु शक्तियो अधूरे,
संबंध दुहु मे अन्योन्याय,
शिव शक्ति बनल संयुक्त रहब हम,
बाट मे,
जुनि कियो पछुआयब।। अछि बाँहि.....
अंवर , पवन, धरती, जल, पावक,
जीवक प्राण पंचतत्व कहाबय,
अछि ऋण समान लगइछ हमरा,
उऋण होयब निज रक्त बहाकय,
पियाएब देशक नीर अवश्य हमरा
श्रद्धा सों,

जन्म भूमिक कोर सुताएब। अछि बाँहि.....
अहिवाति अहाँक हाथक लहठी,
विपत्ति काल बनि जाय कटारि,
सोहागिन अहाँक सिथक सिनूर
विपरीत काल घघकइत अंगारि,
अहाँ, अंबा, दुर्गा, काली, कराल,
समर भूमि मे,
रण चंडी वनि जायब।
अछि बाँहि आइ किछु फरकि रहल
हमर तरूआरि लय आयब।

14 हम बाट ताकब

हम बाट ताकब
अहाँक,
हम बाट ताकब !
भोर, साँझ, दिन मास
बरखो बरख,
सैकड़ो बरख,
जा धरि अछि जिनगी,
जाधरि तन मे
तनिको
बाँचल रहत प्राण !
हम नहि बिसरब
हम बाट ताकब
अहाँक,
हम बाट ताकब ।
हम छलहुँ सभटा जनइत,
की छल अहाँक उद्देश्य,
अहाँ कतहु नहि
जा सकइत छलहुँ,
निरूद्देश्य,
मौन, निमग्न शून्य मे,
किछु तकइत,
मोनक लालसाक
पूर्तिक लेल
औनाइत सन फिरइत,
रहइत कतेक छलहूँ
फिरिसान,
गेल छी
निश्चय गेल छी,
अहाँ अपन गन्तव्य,
हमरा अछि जानतब,
हम बाट ताकब अहाँक
हम बाट ताकब
मोन पड़इत अछि
हमरा,
ओहि दिनुका
निशिभाग राति,
कोनो बातहि बात मे,
अहाँ, बाजल रहि,
जन्मभूमिक कोनो बात,
मंगनीक, अन्न, जल आ वसात,
लगइत अछि ऋण समान
उऋण लेल
देबय पड़त प्राण,
बलिदान,
हम नहि बुझि सकलहुँ
तखन,
बाद मे बुझलहूँ,
अहाँक, ई सोच,
करतब,
हम बाट तकइते रहब
हम बाट ताकब !
अहाँक,
कठिन संकल्प सुनि,
तत्क्षण,
आँखि गेल छल नोराय,
मोन लागल छल औनाय,
मुदा,
अहाँ उत्साहइत

कहने छलहुँ
अबला नहि
सबला बनू
मजबूर नहि
मजगूत बनू
पाछू नहि
आगू बढ़ू
लोक मे अपन
कीर्ति,
नाम करू
अहाँक कहल बात
मोन अछि सभटा,
शत्रु पर भारी पड़ब
अवश्ये,
रण क्षेत्र मे पछाड़ब,
हम बाट ताकिये रहल छी
हम बाट ताकब ।
प्रतिज्ञा पालन हेतु
अडिग,
होइतहि विदा
हमरहि सँ
ल' लेने रही वाक्
यथा,
मरणोपरान्त
जुनि करब आडंबर
हमर श्राद्ध–कर्म
गया मे पिण्डदान तर्पण,
मात्र
माटि–पानि सानि
अचिया पर देब अर्पण,
पूरा करब हम
यथा,
अहाँक मनोकामना,
अर्द्धांगिनी अहाँक
हमहु नहि पछुआयब
ताकब बाट
जन्म जन्मांतर धरि
अछि विश्वास,
कोनो नँ कोनो रूप मे
भेटब,
हम विरहिनि,
तकलहुँ बाट
तकइ छी बाट
ताकिये रहल छी बाट
ताकिते रहब बाट
सदिखन,
हम बाट ताकब
अहाँक,
हम बाट ताकब।
हम बाट ताकब ।।

15 आपसी कलह (द्वन्द)

फिरंगी शासन सँ त्रस्त
अखंड भारतक जनमानस
जखन भेल विवश पस्त,
संकल्प लेल गेल
शपथ खयल
सभ जातिक लोक
बिनु भेद भाव कँ
बिनु जाति पाति कँ
संगठित भ
देश कँ
स्वतंत्र करबाक लेल
फिरंगी कँ
भगेबाक लेल
अपना कँ
वलिदान देलक लोक।
देश जखन भेल आजाद
आओरों भेल बरबाद,
स्वतंत्रता प्राप्तिक
एक दिन पहिनहि
देश भेलइ दू भाग
एक हिन्दुस्तान
दोसर पाक।
नेता दुनु देशक
बनल राष्ट्र निर्माता
भाग्य विधाता
मुदा
दुनु देशक ठकायल
आम जनता।
अंगरेजक संग संधर्ष मे
जतेक लोक
नहि मारल गेल
ताहि सँ बेसी लोक
देशक बँटवारा मे
आपसी दिआदिक झगड़ा मे
मारल गेल
जकर प्रत्यक्ष गवाह
नोआखाली
समस्त
देश–विदेश मे
चर्चा मे आबि गेल।
आपसी द्वन्द
एकटा ऐहन
बिष–वृक्ष
रोपि गेल
जे
दुनु देशक
आपसी कलह मे
नित दिन
निरीह जनता
कतेको मारल गेल
एखनहु
मारल जा रहल अछि
पड़ोसी आनदेश
तमाशा देखि रहल अछि
तिनतसिया चीन
अपन सभ कार्य
सुतारि रहल अछि

16 विडंबना

बात रहइ
जहिया देश
होयत स्वतंत्र
घर–घर मे
जड़इत रहतइ
अखण्ड दीप
विनु पक्षपात कँ
मजगूत रहत
हमर गणतंत्र
चौसठि बरखक (15.08.2010)
स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात्
गाम तँ
एखनहु तक अछिये
अविकसित
अन्हार,
मुदा,
शहरो, महानगरो
कहाँ भ' सकल
विकसित
प्रदीप्त, उजियार।
वनल कतेको
पाँच सूत्री, बीस सूत्री
दीर्घ सूत्री कार्यक्रम
गाम आ
भाहरक विकास पर
एखनहु तक
होइतहि अछि विचार
मुदा
इहो सत्ते अछि जे
एखनहु तक
कोटिक–कोटि
पढ़ल–लिखल युवा पीढ़ि
छथिये बेरोजगार।
भेल कतेको बेर
संविधान मे
प्रयोजन संसोधन संयोजन
पुनर्विचार
मुदा
सभतरि रहल
एखनहु तक ठकायल
सामान्य
देशक नागरिक
कथित
आरक्षण कँ
नाम पर मात्र
नेता लोकनिक टाक
भेल उपकार।
उलंग–अंग एखनहु
कतेको भारतवासी
पेट–पीठ एक भेल,
गुदरी सँ
झँपइत अछि अंग
मुदा
संसद मे
अपनहि लय
साँसद झखइत
दरमाहा, घरक भाड़ा
पेंशन इत्यादिक लेल
व्यग्र नित
मचवइत छथि
हुरदंग।
वर्त्तमान मे
देशक जनता
असहाय, हतास निरास
एखनहु
अपना के

बुझइत अछि
परतंत्र
विडंवना ई अछि जे
आजुक
गणतांत्रिक
शासन
व्यवस्था मे
अनपढ़ तस्कर
कथित
जातिवादी,
सुविधा वादी
अवसर वादी
नेताटाक लेल
भरिसक
ई देश
भेल अछि
स्वतंत्र!

17 अलनीनो

अलनीनो,
ई के थिक अलच्छी
कतय सँ आयल
उड़हरि कय ?
कहियो नहि सुनने रही
एकर नाम
कत्तऽ एकर गाम ?
अलनीनो
हराशंखनी
निरवंशिनी कें
नहि भेटलइ
ठौर, आनठाम
चलि आयल
लाज, शरम त्यागि
निर्लज्जी
हमरहि घर गाम–।
जेना
कमाकऽ राखि गेल हो
एहिठाम–
एहि नटिनियां
कुल घातनीक
सुनितहि नाम
दिनकरक बढ़ि गेल
रक्त–चाप
दरकि गेल धरतीक,
वक्ष;
झंमान तृण
गाछ–वृक्ष
बिसुखि गेल मेघ
रूक्ष भेलाह इन्द्र।
अलनीनो,
कंसनी दइत्यनीक
डंस सँ
ससंकित हतोत्साह
कृषक
हर–पालो मे
लागल वीझ
औंघिये
अलसायल
वृषभ,
कृषिका जनिक
हिया मे उठल
टीस
टोटका
जटा–जटीन
गोहारि
गह्बर
गोसाउनि ईश।
अलनीनो
विदेशिनी
डाइनी सँ त्रस्त
काछु, वेंग, साँप
तरपइत माछ
मरिचिका मे
भटकइत मृग
गर्जन करइत
बाघ, सिंह
मयूर हतास

कथि पर
करत
नृत्य ।
जीव–जन्तु
गाछ–वृक्ष
बतास
तकइत टक–टक
जलबुन्नक
आस
उच्चे धाड़े
नील आकाश
करबद्ध, पूजा
प्रार्थना
आराधना
आह्वान,
हे देवराज इन्द्र
उठाऊ अपन
कठोर वज्र
मारि भगाउ
दइत्यनी, कंसनी
कुलछनी, निरवंशिनी
विदेशिनी
अलनीनो कँ
आपस निज देश
सात समुद्र पार
करू उद्धार
होयत
वड़का
उपकार
बरसाउ
कोमल
अनमोल
बरखा बुन्नक
पुष्प,
पियासल
धरती के
शीघ्रहि करू
तृप्त, तृप्त, तृप्त,
बचाउ
सृष्टि।

18 रक्तबीज

ट्रेन पर हमला
होटल पाँच सितारा पर
हमला
राज्यक राजधानी पर
हमला
देशक राजधानी दिल्ली पर
हमला
संसद पर
हमला
देशक न्यायपालिकाक ऊपर
बम ब्लास्ट
देशद्रोही आतंकवादी रक्तबीजक
हमला।
मारल गेल
प्रत्येक बेर
निर्दोष, देशक जनता
बहइत रहल
रक्तक पेमार,
घायल, मनुक्खक
लहास,
आर्न्तनाद
चित्कार
देशक नेता
पक्ष, विपक्ष
पास केलक
कतेको बेर
शोक प्रस्ताव,
सुग्गा रटन्त,
एकहि शब्द
निंदा, घोर निन्दा,

प्रधानमंत्री
राष्ट्रपति
उपराष्ट्रपति
सभक मूहे
एकहि शब्द
एकहि राग
कायरतापूर्ण
बर्बरतापूर्ण
घटना
निंदा, निंदा
मानव अछि शर्मिन्दा
दोखी नहि
बकसल जायत
आतंकवाद कें
समूल
मेटाओल जायत
अपने सभ
धैर्य ध' रहू,
कठिन वखत मे
सरकारक संग रहु
सरकार लेत
कठोर व्यवस्था
सरकार पर राखू
आस्था
जे गेलाह अछि मारल,
तनिका परिवार कें
भेटत, उचित मुआवजा
घयलहु कें
भेटत उचित चिकित्सा
यथोचित मुआवजा

सरकारक
डपोर भांखी अपील
बेर–बेर घटना पर
प्रत्येक बेरक
कथित दिलासा
सरकारी लालफीता
शोषण, असुरक्षा
बिनु मुआबजाक
सभतरि ठकायल
प्रभावित जनता।
तीन दशक सँ वेशी,
आतंकी सँ लड़इत
शहीद भेल कतेको
सेना, सिपाही आ
देशक नागरिक पकड़ायल
कतेको आतंकी कँ
देल गेल सजा
आजीवन कारागार
मृत्युदण्ड फाँसी
एखनहु तक
चलितहि अछि
न्याय प्रक्रिया
मुकदमाक सुनबाइ
तारीख पर तारीख
घिचाइत, मुदा
तारीख (किछु अपवाद छोड़ि)
नहि आयल
अंतिम फैसला
उचित कारवाइ।
जटिल, लंबित
न्याय प्रक्रिया पर
बढ़ल जा रहल छइ
रक्तबीजक सुरक्षा,
सेवा आ ओकर
खातिरदारी पर
शाही खर्चा
कंतेको प्रहरी
बनल
ओकर
टहलुआ/बहिया
जहल मे महल जेकाँ
सेवा पबैछ
ओ
मानव हन्ता।

19 पाकड़ि गाछ

बरखो बरख
सैकड़ो बरख
सँ सहइत
प्रचंड रौद आ वसात
शीत, उष्ण आ वरिसात
प्रकृतिक सहइत कतेको
झंझावात
बिनु मँगने
खाद–पानि
गाम के लोक के दइत,
सदातनि
हरियर पातक
ओढ़ने चादरि
शीतल छाहरि,
हमरा गामक
बीचो–बीच
एकटंगा देने
चतरल, झमटगर गाछ
ओ छल एकटा
पाकड़ि गाछ।
गाछक परिधि मे
सदातनिक
दिवा रात्रिक छल
ओ लोकक वैसार,
आ शयन–स्थल।
बिनु जाति–पाति के
कयने कोनो विचार
निर्विवाद, निश्छल,
होइत छल विचार।
कियो पथिया बुनइत
कियो पटिया बुनइत
कियो खड़ऊआ
डोरी बंटइत
तऽ कियो–कियो
बीड़ी बनबइत
तमाकू चुनबइत
हुक्का, चीलम
बीड़ी पिबइत
आपस मे
हँसी ठट्ठा करइत
सभहक सुख–दुःखक
सहभागी छल ओ गाछ
गामक लोकक बीच
भइचाराक प्रतीक छल
ओ पाकड़ि गाछ।
गाछक
डारि–डारि पर
चिड़इ–चुन्न–मुन्नीक
कलारव,
चहकब, फुदकब
आ भोरहरबा मे
कोयलीक पराती गायब

गामक लोक कँ
मोन मोहि लेने छल
गाछक परिसर कँ संगीतमय
बना देने छल ओ गाछ
एक तरहे
विहंग कँ स्वच्छन्द स्वतंत्र
आ
निर्भयताक आश्रय स्थल
बनल छल
ओ पाकड़ि गाछ।
गामक कोनो हो
आवश्यक
बैसार
उत्थानक हो विचार
वा
लोकक मध्य
झगड़ा–फसाद पर
पंचइतीक हो दरकार
निश्चित रूप सँ लोक कँ
उचित न्याय
भेटइत छलइक,
लोक संतुष्ट रहइत छलइक।
गामक
न्यायिक
अध्यात्मिक
वैचारिक स्थल छल ओ
गाछक परिसर
जकरा प्रतिष्ठा पर
कहियो नहि लगलइ,
जाति–पातिक कलंक
लोक आपस मे–
घुमइत, फिरइत
एक दोसरा सँ
भेटइत छलइ निधोख निःशंक।
गामक सर्व–धर्म स्वतंत्रताक
प्रतीक छल ओ गाछ
धर्म निरपेक्षताक
प्रति–मूर्ति छल
ओ पाकड़ि गाछ।
कहिया ई गाछ जनमल
कहिया नमहर भेल
जुआन भ' चतरल
गामक कतेको पुरखा
देख गेलाह
गुजरि गेलाह
गाछ,
ओहिनाक ओहिना,
हरियर, झमटगर सकतगर
गामक
रीति–रेबाजक
हरख–विषादक
गवाह छल ओ गाछ

ऐतिहासिक धरोहरक
प्रतीक छल ओ
पाकड़ि गाछ।
पल्लवित–पुष्पित
गाछ के सुखेबाक,
मारबाक लेल
सक्षम अछि
एकटा बगुला
धर्म निरपेक्षताक
कोमल ताग कँ
तोड़बाक लेल
मेटैबाक लेल
सक्षम होइछ
एकटा नेता चुगला,
दुहुक एकहि होइछ
संस्कार
अपन कथित
स्वार्थ सिद्धिक लेल
दुनु एकहि भजार
नभरी मक्कार।
चिड़इ–चुन्न मुन्नी
तहिअहि उड़ि भागल
जहिया
ओहि गाछ पर
एकटा बगुला परिवारक
भेलइ वास
गामक परिवेश,
भइचारा,
धर्म निपेक्षताक सूत
तहिअहि टूटि गेल
जहिया चुगलखोर नेता
आरक्षण
जाति विभेदन पर
देलक कथित भाषण
कयलक सत्यानाश।
गाछक डारिपात
तहिअहि सँ
हुअए लागल
पीयर सन उदास
ओ स्वाभिमानी पाकड़ि गाछ।
गाछ छल ओहिना
एक टंगा देने
ठाढ़
सून परिसर
लोकविहिन
टेएहुक टाओ
आब
नहि दइत छइ
हुलीकी,
जतय लोकक
जनल रहइत छलैक
हुजूम

आब ओ गाछक जड़ि
बनि गेल
विवादास्पद,
एक दोसराक
प्रति नेहक
बदला
कटुता,
वैमनस्यता
विविधता मे
एकताक विपरीत
विखंडिता
जतय रहइ
लक्ष्मीक वास
ओतय होमय लागल
वैचारिक
दुरगंधता।
सर्वधर्मक
होमय लागल
उपहास
मल–मूत्रक
स्थल वढ़ी गेल
गाछक परिसर
चारू भाग
देखि एहन इंसान,
होइत अपमान
सहि नहि सकल
लइत अंतिम विदा
निस्प्राण
अर्राक खसल
ओ गाछ,
ओ
ऐतिहासिक
सर्व–धर्मक
प्रतीक
स्वाभिमानी
ओ गाछ
ओ छल
हमरे गामक
महान, एकटा
पाकड़ि गाछ।

20 प्रलयंकारी केदारनाथ

हे केदारनाथ !
द्वादश ज्योतिर्लिंग मे,
पूज्य
अनन्य श्रद्धाक केन्द्र,
विराजमान्
देवभूमि उत्तराखण्ड मे
संगहि पूजित
पड़ोसी–
बद्रीनाथ।
हे केदारनाथ
भागिरथक
कठोर पुण्य तप सँ
द्रवित सुरसरिक
प्रबल, प्रचंड वेग कें
अहिं शीश मे
लपेटि–सपेटि
मानव कल्याणक हेतु
अमृत, कल–कल
धारा मे परिवर्तित क
पिरथी पर
प्रवाह करौने छी
आदि–अनादि काल सँ,
मोक्षक अभिलाषी मानव
अछिये ऋणी
सदा रहत ऋणी,
जा धरि
अहाँक बनाओल
ई जहान अछि
जीव–जन्तु जड़–चेतन
ब्रह्माण्ड अछि।
हे केदारनाथ !
अहाँ सदा सँ रहलहु
अनाथक नाथ
जे कोनो भक्त
श्रद्धा–भाव सँ
पुजलक
यथा किछु बेलपात
आक–धथूर भाँग
अर्पन कयलक
कोनो अपराध
कयलाक उपरान्तहु
कान बात नहि देलहुँ
उनटे तकरा
मनोनुकूल मनोकामनाक
पूर्ति कयलहुँ
जगतपति
भोलानाथ कहेलहुँ,
जनमानसक हिया मध्य रहि
औढरदानीक नाम सँ
प्रसिद्ध भेलहुँ
हे केदारनाथ ।
अकस्मात् ओहि दिन
मास ज्येष्ठ भाुक्ल,
अष्टमी नवमी संयुक्त
दिनांक सतरह
साल तेरह
जून (ख्रश्टाब्द)
सोमवारि
अहाँक पुज्यदिन
कोना
ऐतिहासिक अभि प्त
बना देलहुँ ?
देव नगरी
जे छल प्राकृतिक सौन्दर्यक
अनुपम प्रतीक
धार्मिक, आध्यात्मिक
वैचारिक प्रतिक
अखंड उत्तराखण्ड कें
खण्ड–खण्ड कय
खंडहर बनेलहु
वीरान भयाओन
भमसान बनेलहुँ।
मानइ छी
अहाँक भान्तिपूर्ण
नीरव तपोभूमि मे
कथित किछु मानवक
स्वार्थपूर्ण दखल,
भरिसक नहि भेल रहल,
सहल प्रतिफल
तेसर आँखि फोललहुँ

विनाशक महातांडव
मचा देलहुँ
किछु मनुखक कसूर,
केर बदला
कोटि–कोटि मनुष्य के
दण्ड देलहुँ
घायल मानवक
थकुचल पीचल
छिन्न–भिन्न अंग
टूअर नेना
नारीक सून माँग
सहस्रो भक्तक
क्षणहि मे हरलहूँ प्राण–
जनमानस अछि सन्न।
एहि प्रलय मे
मंदाकिनी,
हिमराज,
ईहो देलन्हि
अहिंक संग।
बद्रीनाथो तँ मुस्काइत
तमाशा देखिते रहलाह
बिझायल चक्र
सुदर्शनक
संग–मौन।
विपतिक मारल मनुक्ख
अछि औनाइत एखनो
निरूपाय
एहू विपत्ति मे
मात्र
अहिक नामक जाप
महामंत्र सहाय
पंचाक्षर
ऊँ नमः शिवाय।
हे भोले
केदारनाथ
हे गंगा
हे बद्रीनाथ,
हम कोन रूपे
भुक्तभोगी
दिवंगतक प्रति
श्रद्धा सुमन
अर्पित करू
नहि फुटइत अछि
मूँह सँ बोल
नहि भेटइत अछि शब्द
कोना पीड़ित
परिवारक प्रति
संवेदना करू व्यक्त
नहि होइत अछि साहस
नहि अछि तन मे
तनिको भाक्ति
मुदा तइयो
हे देव
हम पुनः
अहि समस्त देव सँ करब निवेदन
प्रार्थना अभ्यर्थना,
हमहू सकल अपराध
बहय धार्मिक आस्थाक
मृदु धारा निरबाध
प्रदान करू
दिवंगत आत्मा कँ
चिर भान्ति,
प्रबल बनाउ
भुक्त भोगीक हिया मे
सहन भाक्ति
इच्छा भाक्ति जागृत करू
मानवक हिया मे पुनि
धार्मिक आध्यात्मिक
संतोषक प्रवृत्ति
पुनः कहियो कतहु
नहि हो हे देव
एहन तांडव
महाविनाश
प्रलयक पुनरावृत्ति।
ऊँ शान्ति!
ऊँ शान्ति!
ऊँ शान्ति!

21 तरहत्थी मे अदिष्ट

मंत्री जी अओथिन आइ
गाम मे छलइ हल्ला
आवभगत,
स्वागत, सत्कारक लेल
अपस्यांत लोक
टोल आ मुहल्ला।
मंत्री जी अवश्य
अओथिन आइ
गाम मे छलइ हल्ला।
मंत्रीजीक
विश्वस्त ताबेदार,
मुखिया जी अपस्यांत ओहिना
जहिना
हुनकहि इशारा पर
बेगारी खटइत लखना,
बेर–बेर निहारय लागल
अपन तरहत्थी दहिना,
हस्तलकीरक
नाप कऽ रहल छल,
दिन–दुपहरिया
जागल मे स्वप्न
देखि रहल छल।
टुटली मड़इया पर
बेर–बेर
जाइत छलइ ध्यान
हिया मे
मंत्री जी
मुखिया जीक
दुनुक प्रति
अगाध सम्मान,
ओ छथि महान
तकथिन हमरो दिस
करथिन कलियान।
मंत्रीजीक आगमनक पश्चात्
स्वागत सत्कार मे अकस्मात्
भऽ गेलइ रेलम पेल,
धक्का–मुक्की झुर–झमेल,
ओहि रेलम पेला मे
चुस्त चलाक मुखिया जी
धरा देल एकटा परची
मंत्रीजीक हाथ,
लखना अवाक्
तकिते रहि गेल बाट
हताश निराश
पुनः निहारय लागल अपन
दहिना हाथक तरहत्थी
वामाहाथ छातीपर
दहिना हाथ
बीच कप्पार
चलि गेलइ
तत्काल
अकस्मात्

22 बाट एकपेरिया.....

कियो तोहर सुनउ ने हाक,
पंक–कँ–कंटिल बाट।
छाँह निज दउ ने साथ,
भय तों कर ने घुरि ने ताक।
बढ़ि के चल बढ़इत चल, मोन मे तू ठानि चल
मातृभूमि लऽ शपथ, शैलवक्ष तानि चल,
बाँन्हि ले तूँ माथ रे, पाग रंग केसरिया,
एकसरे, रे एकसरे चल देश के सिपहिया।
देश के सिपहिया, रे देश के सिपहिया,
रे देश के सिपहिया,
देशहित लक्ष मात्र बाट एकपेरिया.....।

बाट जौं छेकउ भुजंग,
रिपु रिछ–बाघ सिंह।
बाट मे अथाह सिंधु,
समक्ष रे हिमाद्रि श्रृंग।
सर्प सिंह खेहारि चल, दर्प नग झमाड़ि चल,
नँघि पग अथाह सिंधु, शत्रु के पछाड़ि चल।
बिगाड़ि के रे शत्रु के, सभ रंग गिरगिटिया,
एकसरे, रे एकसरे चल देश के सिपहिया।
देश के सिपहिया, रे देश के सिपहिया,
रे देश के सिपहिया,
देशहित लक्ष मात्र बाट एकपेरिया.....।

बाट मे अनेक शूल,
बहय वसात प्रतिकूल।
शूल के बनाकऽ फूल,
बतास तोर अनुकूल।
बाट के बहाड़ि चल, बाट नव बना के चल,
थिर न तोर चपल चरण, डेग झटझाड़ि चल
बनि पवन बिहाड़ि रे, पुरूब–पछबरिया,
एकसरे, रे एकसरे चल देश के सिपहिया।
देश के सिपहिया, रे देश के सिपहिया,
रे देश के सिपहिया,
देशहित लक्ष मात्र बाट एकपेरिया.....।

सर्व धर्म एक धर्म,
जानि ले तूँ सत्य मर्म।
जन–जन एक प्राण,
देशधर्म सत्य कर्म।
रीति नव बनाके चल, कुरीति सभ हँटा के चल,
लोक सभ मिला के चल, भेद तो मेटा के चल।
वाटिका के मालि रे, सिंगारि फूलबरिया,
एकसरे, रे एकसरे चल देश के सिपहिया।
देश के सिपहिया, रे देश के सिपहिया,
रे देश के सिपहिया,
देशहित लक्ष मात्र बाट एकपेरिया.....।

देश पर गुमान कर,
देश के संतान रे
देश तोरहि सँ महान,
देश केर प्राण रे,
शीश ताँ उठा के चल, ध्वज लहरा के चल,
शीश कटि जाउ मुदा, ध्वज जुनि झुका के चल।
बजा के रन डंक रे, सगर नगर डगरिया,
एकसरे, रे एकसरे चल देश के सिपहिया।
देश के सिपहिया, रे देश के सिपहिया,
रे देश के सिपहिया,
देशहित लक्ष मात्र बाट एकपेरिया.....।

23 अमर रहतइ दिन पंद्रह अगस्त.....

टूटल बेड़ि परतन्त्रक, स्वाधीन भेल छल भारत वर्ष
सन सैंतालीस सदी बीसमी, अमर रहतइ दिन पंद्रह अगस्त।
बिलैंती बनियाँ कपटी धूर्त्त, देखलक देश मे आपसी फूट
सोनक खान छलइ जे भारत, मणि–माणिक ल' गेल लूटि
अत्याचार केलक जे फुरलइ, जनगण देशक भेल छलइ जे त्रस्त,
सन सैंतालीस.....

गाँधी, नेहरू, पटेल, सुभाष, तिलक, गोखले, राजेन्द्र प्रसाद
जनमानस कैँ क' आन्दोलित, फिरंगी शासनक कैल प्रतिवाद,
सूली पर चढ़ि गेला भगत सिंह सहित अनेको देशक भक्त,
सन सैंतालीस.....

एक लक्ष्य छल एकहि मंत्र, करबइ देश कैँ हम स्वतंत्र,
फिरंगी के मारि भगाएब, देश मे आनब हम जनतंत्र।
स्वर एक छल ताल एक छल, लय मे मतल रंगरूट सहस्र,
सन सैंतालीस.....

हिन्दु–मुस्लिम, सिख इसाइ, जाति–पाति देलक बिसराइ,
अप्पन माटि–पानिक खातिर, प्राणक बाजी देलक लगाइ,
देशक नारी रूप कराली, सरवस सोहाग सभ कय उत्सर्ग,
सन सैंतालीस.....

अखंड भारत छलइ एक प्राण, खंडित कय गोरा बइमान,
एक कहओलक हिन्दुस्तान दोसर कहबइ छइ पाकिस्तान
भाइ–भाइ मे लड़ाकऽ भागल, दऽ आजीवन आपसी कष्ट
सन सैंतालीस.....

अबइ छइ दिन ई प्रतिवर्ष, राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस
दैत सदा देशवासीकैँ शिक्षा, एक सूत्र मे रहू चौकस
झुकय ने देशक मान तिरंगा, देशहित मे लियऽ संकल्प,
सन सैंतालीस सदी बीसम, अमर रहतइ दिन पंद्रह अगस्त।
टूटल बेड़ि परतन्त्रक, स्वाधीन भेल छल भारत वर्ष

24 महा अभिशाप (एक श्रद्धांजली)

भारतीय गणतंत्र दिवस
26 जनवरी 2001 साल
बीसम शताब्दीक दिन अंतिम
एकइसम सदीक नव वर्षक,
प्रथम मासक शुरूआत।
देने गेल एकटा
कारूणिक मार्मिक,
हृदय विदारक उपहार
बनि गेल एकटा
प्राकृतिक ताँडबक
विश्व मे नव इतिहास।
मनुक्खक जिनगी मे
महाभिशाप।
मोन रहतइ समस्त संसारकेँ
भारवासी, गुजरातक
नरनारी केँ,
ओ प्रलयंकारी महाविनाशक
विध्वंसक भूमिकंप।
कृतज्ञ देशवासी
जखन अपन,
52म गणतंत्रक
सम्मानार्थ
तिरंगाक नीचा
जूमल छल
गबैत राष्ट्रगान
आभार प्रकट करइत
सहस्र समर्पित
शहीद स्वतंत्रता सेनानीक
गुणगान।
धरती माय तखनहि
भ'गेलीह चलायमान।
सिंथल सिंगारल गुजरात
क्षणहि मे भऽ गेल
मटिया मेट श्मशान।
विश्व मानचित्र पर
चमकइत दमकइत रहल
ध्रुवतारा जेकाँ
सत्य अहिंसाक पुजारी
विश्वक जननेता
भारतक हृदयसम्राट
शहस्त्राब्दिक शिखरपुरूष
बापूक जन्म भूमि
गुजरात।
प्राकृतिक संपदा सँ परिपूर्ण
प्रगतिक पथ पर अग्रसर
गाँधीजीक कर्मभूमि
भरिसक बनि गेल
कोनो विध्वंसक भाक्तिक,
ईर्ष्या द्वेश आ
कोपभाजनक
केन्द्र विन्दु।
की कहल जाय
कोन शब्द सँ
परिभाषित कयल जा सकइछ !
एहि, कारूणिक मार्मिक
दृष्टि केँ
त्रस्त टूगर लोक
करइत विलाप
जॉकल लहास
हे विधाता, करह माफ
केहन तोहर
मनुक्खक प्रति
अनुराग आ
निसाफ !

25 हे मेघ बरिसु

हे मेघ बरिसू
जुनि परतारू हमरा,
पुःन टारब जुनि
काल्हि परसू
हे मेघ बरिसू।
दिवाकरक ताप सँ
संतप्त त्रस्त
विदीर्ण वसुधाक वक्ष
लहकल, दहकल
ढबकल आँखि
निज संतान
करेज मे दाबि
मिथ्या,
परबोधि रहल अछि,
बिसुकल ममताक
आँचर तऽर
अविचल, आठो पहर
करइत अर्त्तनाद
तकइत अहिक बाट
हे मेघ बरिसू।
सुखायल पोखरि
खेत पथार
फाटल दरारि,
बुन्न–बुन्न लए
तड़पइत मीन
बौक सन मौन
बेङ्ग,
कलपइत,
कांकोड़, डोका, काछु,
फुफकार छोड़इत,
व्याकुल भुजंग,
नायक लेल
मयूरक पद मंद,
हकासल, पियासल
चिड़इ, चुनमुन्नी
बकुला, हंस आक्रन्त,
करइत क्रदन
निलाकाशे
उच्चे घाड़े
तकइत अहिंक
रूप कृष्णांगी
हे मेघ बरिसू।
अलसायल सन बृषभ
हतोत्साहित कृषक,
हँसोथइत
माथ, कपार,
घुन लगइत
ह'र, पालो
बीझ लगइत फाड़,
कृषिका
जनिक अंतहीन
कबुला टोना
जटाजटीन
झमान तृण
गाछ–वृक्ष
उड़इत धूरा
अछइत अहिबाति
विधवा सन
बाध–बोन,
कनसोह लइत
सदिखन
अहिंक पद–चाप
घनघोर घटाक
तरंगक
हे मेघ
आर जुनि करी

बिलंब
बरिसू
हे मेघ, बरिसू
हे नीरद
जलद, जलधर
जीवक आधार
अहीं सँ सृष्टि
वसुधाक सिंगार
सम्हारि
विद्युतिक तरूआरि,
प्रचंड प्रवाह,
अथाह बाढ़ि
टारि दहाड़'
अकाल, दुर्भिक्ष
लय बरसू जल
कोमल बुन्नीक पुष्प
हे सृष्टिक मूलाधार
जुनि आर तरसाउ
जुनि गरजब
आर, जुनि करी बिलंब
बरिसू, बरिसू, बरिसू
हे मेघ !
बरिसू !!

26 शहर सँ बढ़िक' गाम

ओ, आइ
औनाय रहल छल,
गाम जयबाक लेल,
व्याकुल भ' उठल छलइक
ओकर मोन
अपन गाम,
अपन लोक,
रेवाज
आ
मातृभूमिक लेल।
ओहि दिन,
ओहि दिनक
मुहूरतक नाम
सुनि
बारंबार ओकरा
उठइ छलइ क्रोध
सिहरि उठय छलइ देह
जहिया
गाम छोड़बाक लेल
शहर जयबाक लेल,
अपना कँ
बड़ा भागमंत बुझने छल,
गाम कँ अति
हेय दृष्टिये तकने छल
जेना
गाम,
गाम नहि
नरकक कुंड हो
मूर्ख, गमार सँ भरल,
समाजक झुण्ड हो,
अपसंस्कृतिक
,जतय हो वास
करइत उपहास,
ओ यैह सोचि
भरिसक
छोड़ने छल गाम,
शहर मे रहब ठाठ सँ
चिन्हत लोक
बुझत होशियार
चलइत बाट मे,
ओकरा ओहि दिन
शहर लागल रहइ
स्वर्ग।
अपना कँ
कहबय लागल छल
शहरी बाबू
हुअए लागल छलइ
अपना पर गर्व
ओकर स्वप्न
तखनहि भेलइ भस्मीभूत
जखन देखलक
शहरक असली रूप
भोर–साँझ एकटंगा
कार्य पद्धति
मालिकक अनटोटल
अकारण फज्जति
यातायातक
रेलम पेला मे पिसाइत
नित दिनक
नव झमेला मे लटपटाइत,
असहाय अशो थकित,
हतोत्साह, हताश,
अकस्मात्
ओहि दिन ओकरा
दृष्टि पटल पर
उभरि आयल रहइ
गाम।
ओकरा, बुझना मे
आबि गेलइ तत्क्षण,
जँओ

शहर थिक
स्वर्ग
तऽऽ.....
हम अवश्य
स्वर्गवासी
भ' चुकल छी,
अछइत देह मे प्राण,
भेल सन निस्प्राण,
प्रवासी कहबइ छी।
एतय
ककरो कियो ने
आन,
एक दोसरा सँ
अनजान
अपना मे समटल
क्लांत
मोन सदा
एकान्त,
रौद, वसात आ
पानिक चुकबइत
दाम,
बेबश भ'
जिनगीक बोझ,
उघि रहल अछि सभ
एहिठाम।
मुदा गाम।
रहउ ने
नरक कियैक ने
भेटइ छइ
एतयै
खाँटि,
माटीक लोक,
जकरा हिया मे,
सदातनि सँ,
बहइत आबि रहल छइ
लोक संस्कृतिक धारा,
जे जगबइ छइ
समाजक लोक मे
नव चेतना,
नव जागृतिक
नव संस्कारक
प्रवाह,
जतय समस्त
वर्ण, जाति मे
एक दोसराक संग
बनल छइ
अटूट संबंध
बाबा, काका, भैयारीक
सदातनिक
आंतरिक अनुबंध
जेऽऽ
गाम–गाम मे
सुलभ छइ
शहर मे
दुर्लभ छइ।
जँओ
शहर थिक
कथित स्वर्ग,
तऽ
गाम निश्चय
स्वर्ग सँ बढ़ि के अछि,
शहर सँ बढ़ि के अछि,
गामऽ गाम नहि
चारूधाम थिक
गाम
सुखमय, सुन्दर
अनमोल,
मोक्षदायिनी
बैकुण्ठधाम थिक
गाम।

27 फूल हमर नाओं

फूल हमर नाओं उपवन मे,
हम दमकइ छी, हम चमकइ छी,
अछि रंग–बिरंगक रूप हमर
मदमस्त मदन कैं नचबइ छी.....फूल हमर....

हमरहि सँ उपवन मे वहार,
करइछ प्रकृति सोलह सिंगार,
गम–गम सौर भित वयार
हम सतत प्रकृतिक आँगन मे
नितदिन मुकुलित भए अंगराइ छी.....फूल हमर....

चढ़ि देवक मस्तक कंठहार,
जुग पाणि भक्तक मनुहार
प्रियतम नेहक प्रेमोपहार
हम बसल सभक हृदयांगन मे
मन लोक सभक हम हरइ छी.....फूल हमर.....

ओ शीत–उष्ण सँ अछि जे त्रस्त
बिनु घर आंगन के निर्वस्त्र
जे सदा जिनगी मे सहइत कष्ट
हम अनुपम सेज बनि हुनकर
नव चीर बनइ लए मनबइ छी.....फूल हमर.....

ओ सत्य मार्ग जे देखा गेला,
ओ जाति पाति कैं मेटा गेला
जे सर्व धर्म गुण सिखा गेला
हम सदा समाधि पर हुनकर
शत–शत शीश के झुकबइ छी.....फूल हमर...

देशक हद पर पग–पग अग्रसर
उत्सर्ग प्राणक लेल जे तत्पर
जे भेला देश पर निछावर
हम सदा हुनक चरण रज लए
जनम–जनम सँ तरसइ छी.....फूल हमर....

28 तकइ छइ हमर बाट गाम

तकइ छइ हमर बाट गाम
मौनबौक बको–ध्यान,
एक टक अविराम,
तकइ छइ हमर बाट गाम।

जहिया अयलहुँ प्रवास
गाम हमर भेल उदास
बिनु लोकक गाम केहन
अहिबातिक उजड़ल सोहाग।
सिंगारल बाट–घाट
लगइछ मरघट तमाम !
तकइ छइ हमर बाट गाम।

पीपर ओ बरक गाछ
झुलइ छलहुँ साँझ प्रात
चिड़इ–चुन्नमुन्नी नित,
दइछ एखन उपराग,
ककरा झुलेबह आब
ओ जखन परदेश ठाम।
तकइ छइ हमर बाट गाम।

हक्कन कनइत हमर गाम
ल' ल' कए हमरे नाम
आबह परदेशी कियै
बैसल छह आन ठाम
रखने छी तोरा लए
लीची आम जाम लताम।
तकइ छइ हमर बाट गाम।

अपन माटि अपन बोलि
कखनों ने जइहऽ भूलि
एक सूत्र मे सतत
रइह सभ हिलिमिलि
प्रवास यदि नीक बुझाय
गाम तोहर वैकुण्ठधाम।
तकइ छइ हमर बाट गाम।

मौन–बौक वको ध्यान
एक टक अविराम।

29 एलइ फेर जनमारा जाड़

एलइ फेर जनमारा जाड़
एलइ फेर जनमारा जाड़
कार्तिक बिततहि
अगहन चढ़ितहि
पूस–माघक दिन धेने अन्हार। एलइ फेर.....

भालड़ि भेल तन थर–थर काँपइ
पहिरन ओढ़न स्वीटर शाल
छुबिते पानि हाथ जे अकड़इ
लोकक जिनगी भेलइ बेहाल
कोना कियो कतहु बहरायत
दुलकइ देहक भितरीक हाड़। एलइ फेर.....

बुढ़–पुरान कोठली मे दुबकल
सरदीये उकासी निन्न हराम
चारू प्रहर घूर छइ पजड़ल
जाड़ सँ माँगथि त्राहिमाम
सूतक लेल छइ गरम बिछौना
सेजौट मोटगर नार–पुआर। एलइ फेर.....

बुधना जेतइ कोना खटइल
तन पर नहि छइ एको बस्त्र
जाड़क मारल नेन्ना कलपइ
भूखे–पियासे, नाँगट गत्र
शीत–लहरी केर प्रबल प्रवाह मे
कियो ने दै छइ पैंच उधार। एलइ फेर.....

माल–जाल मालहि घर बान्हल
साँझक साँझ करइ उपास
ओसक कण सँ तऽर–उपर छइ
बाट गाछ चास आ घास
कुकुर बिलाड़ि सभ काहि कटइ छइ
हुँआ–हुँआ करइ सियार। एलइ फेर.....

शिशिरक असह दुसह त्रास सँ
जीव–जन्तु सभ करइ विलाप
तीन मास ई कहिया बिततइ
दैवक देल केहन अभिशाप
दिनकर दीनानाथ यौ उगियौ
शीघ्र करू जाड़क संहार । एलइ फेर.....

30 कोना कऽ हम घिचबइ हर

कोना कऽ हम घिचबइ हऽर
पेट–पीठ एक भेलइ तऽर
हरियर घासक कहियो आश नहि
भेटइ मात्र नित सुखले खऽर । कोना.....

सूखल जोत, कदबा पखार हो
मानव के हमरहि सँ आस,
रबी, खरीफ, नगदि फसल हो
हमरे श्रम सँ उर्बर चास,
भरइ उपज कोठी, बखारि मे,
किन्तु ! हमर नहि तनिक फिकर। कोना.....

ग्रीष्म जरइ तन बरखा भिजइ,
शीत लहरी मे काँपइ देह,
के पुछइ अछि दवा–दारू लए,
तनिको हमरा पर नहि नेह,
छोर कसइया हाथ धरातल,
किछु असक्त तन लगितहि जऽर। कोना.....

दोख हमर ई अदिष्टक छइ,
वृषभ कोखि मे भेने जन्म,
मानव जाति लोभी स्वार्थी संग
जिनगी के बुझि सकलहूँ नहि मर्म,
भोला नाथ कहि बनायब बुड़िबक
देखबय बाघ सिंह केर डऽर। कोना.....

आब ने करबइ हम गुलामी
अतिशय भेल करब प्रतिवाद
अपन भविष्य के स्वयं संवारब
जिनगीक नवल अचल बुनियाद
तोड़ि, छान, छोड़ि, गरदामी
स्वतंत्र, साहसी, सबल निडर। कोना.....

31 दियादिक डंस

न्युटन,
अपन गति नियम
जहिया जाहिकाल मे,
परिभाषित प्रमाणित
कयने होयताह
कदाचित्
अवस्से मनुक्खक,
स्वाभाव विचार दिनचर्या
प्रभावित कयने होयतन्हि
आ
ओ अपन गति नियम
अविष्कार मे
सफल भेल होयताह,
पिरथी आ मनुक्ख मे
एकटा
प्राकृतिक नैसार्गिक
विलक्षण गुण होइछ
जे, अपन
गुरूत्वाकर्षणक प्रभाव सँ
केहनो मजगूत
वस्तु वा मनुक्ख कँ
अपना दिस
आकर्षित क'
मजबूरन अपन,
स्वार्थ सिद्ध क' लैछ।
प्रभावित वस्तु वा मनुक्ख
वास्तविकता सँ
परिचित भेलाक पश्चात्
पश्चात्तापहि
एक मात्र विकल्प,
शेष रहि जाइछ
कोनो वस्तु सदैव अपन
वर्त्तमानहि अवस्था
गति वा विरामावस्था
मे रहइछ
जा धरि
कोनो बाहरी तागइत
ओकर
दिशा दशा मे
परिवर्त्तन नहि क' दैछ।
देवासुर संग्राम
सत्ययुगक अछि प्रमाण
जतहि ई दियाद
एकहि कुलक संतान
अपनहि मे
लड़इत आ
मरइत रहल,
ओ नहिं बुझि सकल
बाहरी तागइत, विष्णु मोनक राज
स्वार्थ, विशेष बात
हड़कारा नारद
बनला, माध्यम
कठिया लाड़इन
लगबइत रहलाह
आ
दुनु दियाद कँ
के लड़बइत रहलाह
विष्णु निस्कंटक
बैकुण्ठ राज
भोगइत रहलाह,
त्रेताक अयोध्याराज
सत्यवचन
सत्य वाक्क
लेल छल
ब्रह्माण्ड विख्यात्
मुदा
सामान्य साधारण
नऊरी आ धोबियाक
कुचालि कनफुसकी
मिथ्या प्रचार सँ
रामक वनवास
आ
सीताक परित्याग भेल छल
क्षणहि मे तत्काल
भैयारीक मध्य नेहक
विपरीत

विपरीत
वैमनस्यताक बीज
उत्पन्न भ' गेल छल,
अबध साम्राज्य
तत्काल,
अस्त–व्यस्त
भ' गेल छल ।
टकुरीक सूत
जतेक हो महीन
दियादिक संबंध
तेहने हो पातर
तँ नीक,
बाहरी आन लोक संग
आंतरिक पिरीत,
अपन लोक सँग
नेहक विपरीत
पटुआ सन तीत
लगइत छैक
लोक मे
कहबी छैक
द्वापरक,
कौरब पांडवक
हस्तिनापुर राज
भरल पुरल साम्राज्य
दियादिक मध्य
कटुता ईर्ष्या
वैमनस्यताक
बाहरी, गुरूत्वाकर्षणक
प्रभाव पड़ि गेल
कुरूक्षेत्रक
महाभारत संग्राम
ब्रह्माण्ड विदित
इतिहास बनि गेल
कृष्णक
मोहिनी लुभावनी स्वरूप
आ भाकुनिक
कुचालि मुस्की विदुप
सभतरि
भारी पड़ि गेल
आ
साम्राज्य
मटियामेट भ' गेल।
समान ध्रुब मे, विकर्षण
असमान ध्रुव मे आकर्षण,
हिन्दुस्तान,
पाकिस्तान
एकहि माटिक
दू संतान
आपसी कलह
कटुता मे
अनका संग
आपकताक मोह मे
अपनहि मे
लड़इत अछि
झगड़इत अछि
भरिसक आजीवन
लड़िते, मरितहि रहत
विरोध चलिये रहल छइ
चलितहि रहतइ,
ता धरि
जा धरि
मूल वास्तविकता सँ
परिचित नहि होयत,
ई सभटा बात जनइत
बाहरी,
गुरूत्वा कर्षण, वशीकरण
रूस, अमेरिका ब्रिटेन
तिन–तसिया चीन
संयुक्त परिवार सँ क'
चीन
दुनु के लड़बइत अछि
अपन स्वार्थ,
सिद्ध करइत अछि
दुनिया
तमाशा देखि रहल अछि।

32 खरातक प्रतिदान

चमकल रहतइ हमर भाल,
जौं दहिन भ' रहय नेपाल।
कोशी कमला तोंहे दोहाइ,
एहिना हमरा पर रहब सहाय।

चढ़बइ छी बरखहि सँ घइल,
विपदा आनि मनुक्खक बइल।
उजड़ि उपटि सभ हुअय अनाथ,
गर्वहि उच्च हमर हो माथ।

दाहि, अकाल सभ आबय अहिना,
हमर उदर बढ़य दिन दिन दुगुना।
कतेक जतन सँ हम पाओल राज,
अपन सोचब, दोसराक कोन काज।

देशक जनता केहन वताह,
हमरहि चाकर हमरहि सँ डाह।
देबइ ककरो हमरा जे स'क,
कियो किया मँगइत अछि ह'क।

हम की सभटा देबह तोरहि,
अपनहि हमरा सत्तासोरहि।
फरकहि हाथ पसारय चमचा,
तकरहु तँ देबक अछि खरचा।

हमर राज, राजा परिवार,
बाट छेकि जुनि कर प्रतिकार।
जे माँगत खरात वा दान,
तकरा गोली, भेटतइ प्रतिदान।
देखनहि हेबह कतेको ठाम,
प्रतिवादक अंतिम परिणाम।

33 प्रदूषण

ओ आइ,
बडऽ प्रसन्न छल,
प्रसन्नता ककरहु हेतइक,
ओहेन विलक्षण बात पर,
ओ,
बुझलक आइ पहिल बेर,
ओहो एकटा
जिम्मेदार नागरिक अछि,
एहि गणतांत्रिक देशक
ओ,
आइ अति प्रसन्न छल,
आनन्द विभोर,
परमानन्द, मग्न,
नहि गेल
पिबइक लेल उठौना
पसिखाना,
किनलक
विलैंतिया मदक बोतल
पिबि गेल सबटा तखनहि
एके साँसे
गटा–गटि
गटा–गटि
मदमातल,
तलमलाइत लटपटाइत
बैसि गेल
झुग्गीक मोख पर
ओकरा आइ
प्रसन्नातक
कोनो पारावार नहि छलै
कियो ओकरो सभके
आइ लेने छलइ सुधि
हिया मे आशाक किरण
जागल छलइ।
ओंघरा गेल
ठामहि ओतहि
बेसुध निन्न मे
अकस्मात्
चेहाय उठल ओ
सुनि शोर–गुल, हल्ला
करमान लागल लोक
समस्त मोहल्ला,
बुलडोजरिक घड़घड़ाहटि,
पुलिस भजैत डंटा।
पुछलक ककरो सँ ओतहि
ओ– ई की ?
कथीक एतेक जमघट
ई भीड़, सब की छी ?
बजलइ कियो,
ओहि भीड़ सँ
देश मे–
झुग्गी सँ
पसरल जा रहल छइ
प्रदूषण
तें
एकर कयल जा रहल छइ
उन्मूलन
मोन परलइक ओकरा तत्क्षण,
नेताजीक
ओज पूर्णभाषण
बताह जेकाँ
मारलक ठहाका
हंसिते रहल
हंसिते रहल
अनवरत
तत्पश्चात् बाजि उठल
स्वतः
अवश्य गरीबी थिक
देशक लेल प्रदूषण
स्वच्छ, शुद्ध
पर्यावरण हेतु
गरीबक आवश्यक छइ
उन्मूलन

34 आजुक आधुनिकताक बहइत वसात मे

१

आजुक
आधुनिकताक
बहइत वसात मे,
कम्प्युटर
अहम भूमिका
निमाहि रहल अछि।
करइत छल लोक पहिने,
शरीरश्रम,
मनोयोग पूर्वक
परिश्रम
एखन स्वयं के
यंत्री बना लेलक अछि।
शिक्षित, सुपात्र
छिछिआइत छथि यत्र–तत्र
चाकरीक लेल अंगूठा छाप
मंत्रीक बनल अंगरक्षक,
संतरीक लेल अपस्यांत,
इन्टरभ्यू
द' रहल अछि,
आइ देश, शिक्षित कैं
नव सृजित रोजगार,
प्रदान क' रहल अछि।

२

आजुक
आधुनिकताक
बहइत वसात मे,
कुकुरक महत्त्व
बढ़ि गेल अछि।
सनातनि,
माल जाल
गाय, महिष
पोषनिहार,
एखन बनल
महागमार
अपना कैं
उपेक्षित
बुझि रहल अछि।
हाफ–पैन्ट
अंगरेजबा टोप
साँझ, भोर
टामीक (कुकुर) संग
टहल दौग,
कोर लऽ घुमाएब
निज शैया सुताएब
निज संतान सँ बेसी
दुलार
सुरूचिपूर्ण आहार
कुकुर के दयनिहार,
समाज मे
जेन्टिल मैन
कहबाय रहल अछि,
आइ देश
नव पीढ़ि कैं
स्वान प्रेमक
नव संस्कार
द' रहल अछि।

३

आजुक
आधुनिकताक
बहइत वसात मे,
चिनिया फास्टफुट
लोक मे प्रचलित अछि।
पहिने लोक
ठाँव–पीढ़ि कयल पर
लागल सचार
स्वदेशी भोजन
सुरूचिपूर्ण आहार
ग्रहण करइत छल,
एखन
सांझ–भोरक
भानस करब त्यागि
फुड–स्टौलक पर
नम्हर कतार मे लागि

विदेश निर्मित भोज्य पदार्थ
ग्रहण क' रहल अछि,
आइ देश
नव पीढ़ि कँ
विदेश निर्मित
आहार,
प्रदान क रहल अछि।

४

आजुक
आधुनिकता
बहइत वसात मे
नारि लोकनि
सजग
भ' रहलीह अछि।
सनातनि
कहाबइत अवला
एखन
उठा देल घोघ,
परदा प्रथा
पुरूषक संग
कान्ह सँ कान्ह मिलाय
सबला,
डेग बढ़ा रहलीह अछि
बदलइत परिवेश मे,
हिनका लोकनिक परिधान
लघु सँ लघुत्तम पर
आबि गेल अछि
साड़ीक बदला,
चोली, चूड़ीदार,
कुरता, सलवार
आ नवका–नवका
पाश्चात्य परिधान
बित्तो मे नहि
पूरि रहल अछि।
नारी सशस्त्रीकरणक
उपलक्ष मे
आइ देश
नारी लोकनिकँ
नव परिधान
उपहार द' रहल अछि।

५

आजुक आधुनिकताक
बहइत वसात मे
देश नित्य प्रतिदिन
प्रगति पर प्रगति
क' रहल अछि।
नव घर उठि रहल
पुरान उजड़ि रहल
बनि रहल
नवका–नवका अट्टालिका
पार्क, स्वीमिंग पुल
भवन,
दस महला बीस महला
दीनहीनक पक्ष पर
बुलडोजरि
चलि रहल अछि
देश मे, रहत नहि
एको दरिद्र
मेटा जायत, कलंक गरीबीक
देश संकल्प
क' लेलक अछि
भारत देश,
महान देश,
अनुशरणक'
पाश्चात्य प्रेम,
नव पीढ़ि कँ
पाश्चात्य संस्कृतिक संस्कार
प्रदान क'रहल अछि
आजुक.....

35 एतय लुटेरे टा स्वतंत्र छइ

गाँधी बाबाक एहि देश मे,
की सभ देख रहल अछि लोक।

सत्य अहिंसाक कतहु चर्च नहि
सभठाँ झगड़ अशान्तिक शोक
सत्य जे बाजय से अपराधी
झूठ जे बाजय से अछि भद्र
सर्व–धर्मक जे छथि अनुरागी
तनिका कियो करय नहि कद्र
फिरंगी सँ मुक्त करइक लेल
देशक लेल जे देल बलिदान
देश मे तिनकर कतहु चर्च नहि
भुखे मरइ हुनक संतान।

अपराधी आतंकवादी
जे जनता केर सदा सँ भक्षक
जकरा पहिने पुलिस तकइ छल
आइ बनल तकर अंगरक्षक
देशक नेता चोर उच्चका
बनल देशक आइ तारणहार,
जातिक नाम पर पाबि के सत्ता
कथित कहबैत अछि इमानदार।

देशभक्त मे करय निज गिनती
पुरखा जकर फिरंगीक चमचा
भाइ–भतीजावादक पोषक
अपनहुँ जाति के देखबय अंगूठा
करय अपमान देशक पागक ई
झूठेक पहिरय गाँधी टोपी
सूट–बूट मे सजल सदा
औपचारिकतावश खादी धोती

भ्रष्टाचार सगर बेसाहय
निश्चय छइ देशक बरबादी
एकरा कोना कहब आजादी
जतय छै नेता धूर्त्त फसादी
गुण्डा राजक सदा जे पोषक
तकरा सँ के करत की आशा ?
फिरंगीयो के नाक ई कटलक
जनता कें की देतै निसाफ ?
परतंत्र एखनहु देशक जनता
कहै लेल भारत भेल स्वतंत्र छइ
लोकतंत्रक छइ झूठक नारा
एतय लुटेरे टा स्वतंत्र छै।

36 उपराग

हे एकइसम सदी
देखल तोहर प्रथम दशक
आशा नहि छलइ
लोक कें भरिसक,
तहुँ देखेबह ओहिना
वैह दिन–दुनियाँ
अबितहि पिरथी पर
लोक कें
बीसम सदी सँ बेसी
करय लगबह हरान, परेसान।
हे एकइसम सदी
बीसम सदी सँ त्रस्त,
निरस सन भेल पस्त
आम लोक कें छलइक
कतेको तोरा सँ आशा,
आकांक्षा अपेक्षा,
मुदा उत्तरोत्तर मे
नहि पूरल
मनुक्खक मनोरथ अभिलाषा
असोथकित हतोत्साह,
लोकक मोन मे
पसरि गेल छइ निराशा।
हे एकइसम सदी
तोहर पद चाप
सुनितहि बसुधा
भ' गेल छलीह चलायमान
लील लेल गेलइ कतेको
निरपराधक प्राण,
जकर छह गुजरात
एकटा प्रत्यक्ष प्रमाण।
हे एकइसम सदी
अनलह तों अपनहि संग
एक संगनी
जकर नाम छइ महगी,
अन्न–अन्न कें मरइत लोक,
करइत हाक्रोस विलाप
ई सदा
दइत छह उपराग ।
ई नहि थिकह तोहर
महापाप ?
कृषक, मजूर
दम साधि
तइयो खटइत,
बड़का–बड़का बाबू दलाल
ओकरहि पर
मुँह पान चिवबइत
मौज क' रहल छइ
मजूर, गरीबक भोजन
निम्न सँ निम्नतर
भ' गेल छइ
दालि–रोटीक
कहबी सँ फराक
नोन–रोटियो पर
आफत भ' गेल छइ।
हे एकसइम सदी
हम मानइत छी
तों अनलह नवयुग
आधुनिक वैज्ञानिक
एलेक्ट्रोनिक कम्प्युटर युग
मुदा
संगहि संग अनलह
आंतरिक–बाहरी
आतंकवाद
जातिवाद
प्रान्तवादक माहुर
जे, लोक–लोक कें मोन मे
घृणा भरि देलकइ अछि
कटुता, वैमनस्यता,
भिन्नता सँ
एक दोसरा सँ
फराक क' देलकइ अछि,
दैनिक पत्रक

मुख्यपृष्ठ पर
नित दिनक
मुख्य खबरि
खस्सी, बकरी जेकाँ मनुक्ख
नित बलि चढ़इत,
बलात्कारक
नित शिकार होइत नारि,
नारी भ्रूणक हत्या
बड़ा हृदय कें
विदीर्ण करैछ
हे एकसइम सदी।
हे एकसइम सदी
एखनहु छह तोहर अरुदा
नओ दशक बाँकी
हमर उपराग कें तो
अपराध कहि, सकइत छह
मुदा
हम नहि रहि सकइत छी,
चुप–मौन आँखि मुनि
कान बहिर केने
जखन प्रथम दशकक छह
तोहर ई झाँकी,
तें बाँकी
भविष्यक पीढ़ीकें
केहन बिततइक जिनगी
देह सिहरि उठइत अछि
मोन कलपि उठइत अछि।
मुदा तों जानि लैह
मनुक्खे सँ
तोहर जिनगी छह
मनुक्खक गिनती सँ
तोरहु जिनगीक
गिनती हेतऽ
दोख दइत रहतह तोरा,
जन्म–जन्मांतर धरि
जहिया,
कोनो एको मनुक्खक प्राण
प्रलय कालक बादो
रहतइ बाँचल,
देतह गारि–श्राप
करतह निंदा
नहि तँ एखनहि सँ चेतह
विनष्ट करह दुष्ट कें
स्थापित करह
मनुष्यतत्व कें
जतय वास करय
एके संग सभ जाति,
मेटय सभ
आतंकवाद
प्रान्तवाद
नारीक शोषण
जातिवाद,
निश्चय तों
पुजेबह,
अनंत काल धरि
जाबत धरि रहत
दिवाकर–सुधाकरक संग
तारागण
नीलाकाश
तोरहु नाम जुड़ि जेतह
सत्य युगक समान
जपतह नाम तोरहु
सदा देतह लोक
धन्यवाद,
साधुवाद
रहबह तहुँ चमकइत
ध्रुवतारा जेकाँ
सदा, सर्वदा
निर्विवाद।

37 राष्ट्रीय कार्यक्रम (मनरेगा)

मनरेगा एक एलइ कार्यक्रम,
सगर गाम मे चर्च छइ,
परिश्रमि सभ माथ धुनइ छइ
कामचोर मे हर्ष छइ,

उपरे–उपर कलम चलइ छइ
कागत रंग बिरंग छइ,
एपीएल, बीपीएल, आरक्षण
मचल देश मे द्वन्द छइ।

मुखिया सभ भेलइ जे सुखिया,
सगर नगर मे शोर छइ,
पटना दिल्ली करइ दलाली,
महा कमीशन खोर छइ।

बाट–घाट खोइद लटकौने
जन मानस बेहाल छइ
ठीकेदार मुह पान चिबाबय
सभतरि मालो–माल छइ।

खादी कुर्त्ता धारी नेता
धुर्त गिरगिटिया नाग छइ
जाति–जाति मे कलह बेसाहय,
ग्राम्य संबंध बेलाइग छइ।

जंगल राज मे मनबय मंगल
मनुक्खे आदमखोर छइ,
शान्ति सद्भावक कतहु चर्च नहि
अशांति मचल चहुँ ओर छइ।

38 अनमोल वर

एक समय केर बात कहइ छी, सुनबइ सुधिजन कान लगाय,
कोना जे बाँचत पइत मिथिलाके, तकर करबइ कोनो उपाय।

मिथिलाक सुनाम गामकेर वासी, रहथि व्यक्ति एक बच्चा झा,
तीन वियाह मे दू संतान भेल, कंटिरबा छोट बौआ झा।
वयस पचासम बीति रहल छल, सहलनि ओ दू पत्नीक वियोग,
तेसरहि सँ भेल वर्शक वृद्धि, एक कन्या एक पुत्र संयोग।

बेटा बौआ बउअने सन, अध बोलिया किछु सन बकलेल,
बूढ़क नेरू महादुलारू, लिख लोढ़ा बस तिसरहि फेल।
मध्यम वर्गीय बच्चा झा कँ, यजमनि के सँ गुजरक आस,
जोगरक कोनो पूता नहि भेलन्हि, मोन हुनक सदिखने उदास।

पुतहुक देखक भेल सेहेन्ता, बच्चा कयल घरनी सँ विचार,
बूढ़ भेलहुँ टगि जायब कहिया, बउआ वियाहक कयल नियार।
जाबि देल गेल मूह बौआ कँ, गरदानी खुटेसि दलान,
घटक कतेको आबि तुलायल, चुट्टी काटि उमेठलक कान।

कतबो जतन कयलथि कन्यागत, नहि बाजल कोनो ओ बोल,
लोक सभहक करमान लागि गेल, छल अजगुत वर भेटब अनमोल।
चतुर सुजान एक घटक जी, मीठ बोल बाजल टिटकारि,
बउआ सुन्नर चान लगइ छी, अयना तनिके देखू निंहारि।

चुप रहक लेल देल इसारा, माम आँखि सँ कनखी मारि,
अधबोलिया बौआ मुह खुजल, नहि रहि सकल अपना के सम्हारि।
"एठन अहाँठब टठी डेठलियइ, हुए डियऊ हम्मल वियाह,
टन्डन–मुन्डन जठने टरबइ, लाडट थडून्टा टहबइ वाह।"

हसल लोक मारलक पिहकारी, भेल बच्चा कँ अनहुँ लाज,
साग के कतबहु घी दय छौंकब, बदलत स्वाद की छुपत राज ?
एक अभागल कन्यागत्, आबि तुलायल वच्चा दुआरि,
पुत्रक लोभे सात कन्याकँ, लगा देने छल ओ अंबार।

बेटी सभ के हाथ धरा देब, रहओ बर बरू लूल्ह वा नांगर,
मँगनीक बर ओ ताकि रहल छल, लागय नहि एको पाइ काटर।
आगत–स्वागत कन्यागत कें, भरल लोक बच्चाक दलान,
टोलक लोक देखि के ओकरा, मोन मे आरो भेल अहाँग।

पुत्र हमर जे होनहार अछि, पुत्र पर हमरा अछि गुमान,
बौआ हमर की सागक ढाकि, किया करब मंगनी वरदान ?
गर्वहि माँगल काटर टाका, हजार पचासेक ओ मुह फोड़ि,
कोन्टहि हिस्सा घरनी मांगल, सवैया हमरो देबहि जोड़ि।

कोना जनम देल बेटा हम, बाप कें तनिको छन्हि आभास,
हम जनइ छी कोना के सहलहुँ, प्रसव वेदना ओ नओ मास।
व'रक बहिना कोना चुप रहथिन, बाजल हमरा एकेटा भाइ,
कन्यागत सँ हमर आग्रह, फट–फटिया एक देथिन्ह विदाइ।

एक फट–फटिया तइ पर काटर, जोड़ नगद कुल सवा लाख,
व'र छोड़ि के सय बरियाति, पिटलक कन्यागत निज माथ।
दलाने बइसल फौजी एकटा, बच्चा पर तरेरलक नयन,
मोन तकर तमतमा गेलइ छल, लागल छगुन्ता उठल फानि।

तोरा घर के कोरो–बाती, कतेक ठाठ मे देखा तो गनि,
सवा सय ओ टा केस कतय छौ, देखा रे बगुलबा उस्सर चाइन।
ई बच्चबा रे घरकटवा रे, किया कथिक तों माँगल अछि काटर,
सुथनीसन अलबौक व'र पर, मनोरथ हाथ बहत्तरि आँतर।

नबालिग व'र कन्याके, जे कियो करइछ वियाह,
समाजक ओ अछि अपराधी, बंदीगृह मे दिन कटताह ?
औ कन्यागत जुलुम कयल अछि, भेलहुँ अहाँ केहन अज्ञान,
बेटा हो वा हो वा बेटी, पुत्र–पुत्री दुहु एक समान।
परिवार सिमित जौं रखितहुँ, बेटी पढ़ल रहितय विद्वान,
बच्चा झा सन बेटाबेच्चा सँ, मैथिलक निश्चित होइत कल्याण।

39 बाबन हत्था बड़का दलान

हमर देश भारत
हिन्दुस्तान,
छइ महान,
हमहि सभ नहि
अगल–बगल बसल देश,
पड़ोसी आन ओहो,
जपइछ दिन–राति
हमरहि देशक नाम
करइछ गुणगान
हिन्दुस्तान छइ महान।
ओ, ओकर पुरखा
देखइत आबि रहल छइ
सनातनि
आदि, अनादि काल सँ
हमरा देशक
भरल पुरल अंगना,
खेत खरिहान
टाट–फरकि विनु
बेढ़
बिनु पहरूआ कें
चारू कात सपाट, समतल
खुल्लम–खुल्ला मैदान,
ओ बड़का
बाबन हत्था दलान।
जकरा देखि धरोहि लागल
बिनु छान–बीन
बिनु रोक–टोक कें
निर्भय
बइसक लेल आयल,
अबैत रहल पड़ोसी,
विदेशी मेहमान।
फल–फूल सँ लुबधल
गाछ–वृक्ष
मंद गति सँ बहइत
सौरभित वसात,
बारहो मासक पावनि–तिहार
बारहो मासक वतास
कोकिलक प्राती, कजरी, होरी,
मधुर गान
कल–कल निर्मल प्रवाह
गंगा–यमुना, सरस्वती
कोशी, गंडक, बागमति,
कमला वलानक
जाहि जल सँ तृप्ति पाबि
करय पुण्य स्नान
ओ ओकर पुर्वजक
भेल कल्याण।
प्रकृतिक अनुपम मनोरम
ऐहन जतय हो नयनाभिराम,
कहू कोना आपस जेताह
ऐहन प्रवास छोड़ि
अपन देश–गाम
विदेशी अतिथि मेहमान।
त्यागि, लाज, शरम
ओ बेशरम
हमरहि एक बगल
फराकहि दोग मे
बान्हि लेल एक मचान।
हम संकोचहि
किछु बाजि नहि सकलहुँ,
नहि कयलहुँ वाद–विवाद
कोनो प्रतिवाद
तखन कोना करितहुँ,
कोना कहियउ

चलि जाउ
आपस निजधाम
श्रीमान्।
हमरा देशक मूलमंत्र
अतिथि देवो भवः कैँ
नहि होइत अपमान ?
अतिथि कैँ वर्त्तमान
उगि आयल अछि पाँखि
हमरहि पर उन्टे,
तरेरइ अछि आँखि
छुटि गेलइ अछि धाख
कृतज्ञताक बदला
नित करइछ,
हमरे अपमान्।
अपन सगा–संबंधी कैँ
बजा कैँ
अपन सखा–संतान
बढ़ा कैँ,
हमर, दियादक सह पाबि
हमरे
दबा कैँ
हमरहि पर जारी करइछ
अपन कथित फरमान ।
ओकरा पर
विवश भ बजलहु जखन
कयलहुँ प्रतिवाद
हमर सहोदर
हमरे दियाद तखन
ठानि लेलक झगड़ रार
सह दइत ओकरा
हमरहि सँ
लड़इक लेल तइयार।

नित दिनक
ओकर, कथित
गतिविधि,
नमक हरामी, गद्दारी
वेविचारीक
देखितहुँ
समक्ष साक्षात्।
हमर सहोदर दियाद
मुनने अपन आँखि
तूर देने कान
बनल आन्हर
बहिर, अकान।
कहू!
कोना नहि बढ़इत मोन
ओहि मन बढ़ुआ
घुसपैठिया कैँ
चोरि, चुगलखोरि
सीना जोड़ि
करय बलजोरि
गद्दार, शैतान आ बेइमान।
मुदा ऐहन परिस्थिति
उपस्थित भेलाक प चात्
हमरा सभ सूतल
एखनहु तक
चद्दरि तानि,
नहि बेढ़ि सकलहु,
एखनहु तक
अप्पन, सीमा, सरहद चौहद्दी,
आ अपन
बाबन हत्था
बड़का दलान ???

40 गै महगी भाग

ई महगी अलच्छी
केहन छइ?
ने एकरा लाज ने धाख
छेकने हमर अंगना
कोन्टर आ बाट।
ई महगी निर्दयी,
एकरा की कहल जाय
उठिते नित प्रात
देखैते साक्षात्
उठैत अछि तामस
लागि जाइत अछि ज्वर
जरय लगइत अछि
देहक रोइयाँ–रोइयाँ जखन,
अहारक लेल
कल्पैत कनइत अछि नेन्ना,
भनसा घर उदास
चूल्हाक अवकाश
हतास, निरास
अछैत हाड़–तोड़
खटलाक बादो जखन
रहय पड़ैत अछि उपास
हमर दीनता पर
ई लगइछ
मुस्कुराय, अंगराइत
करइत अछि हमर
जखन उपहास।
ई, महगी बेइमनियाँ
नहि जाइत अछि
कोंढ, करेज
खाइक लेल ओकर,
जे जनम देलकइ तकर,
देशक भ्रष्टाचारी मंत्री
घुस खउका
धन्ना सेठ महाचोरक
जे चोरओने रहइछ
गोदाम मे चोरिक अन्न
जे मारइछ सदा
मनुक्ख कँ
अन्न–अन्न कँ,
एकरे नाम पर सदा सँ
मौज क' रहल
ओ महाकृपण
जे कहबैत अछि
लोक मे, सभ्य–सम्पन्न
एहि महगीक छुतहरिक
सुनतहि नाम
लोक मंगइत अछि त्राहिमाम
एकरा मुइनहि
मनुक्खक बचतइ प्राण
मानव–मानव मे
नहि रहत वैमनस्य
शान्ति–संपन्नता
रहतइ सभठाम।
एहि महगी हठधर्मी कँ
केहन छै अखद अरुदा
चुरू भरि पानियों नहि
एकरा डूबि मरइक लेल
एकटा लुतियो नहि छइ
एकरा जरइक लेल !
एकरा सतबढ़ना सँ आवश्यक
अछि झाँटब,
झोंट पकड़ि आवश्यक
अछि घिसिआयब
एकरा भगेबाक अछि ओतहि
सात समुन्दर पार
जौं एकरा हेतैक गत्तर मे
तनिको लाज
तँ पुनि नहि आओत इम्हर,
घुरि आर।
उरहड़ि जो गै महंगी
उरहड़ि जो
भाग हमरा अंगना सँ
भाग हमरा समाज सँ
भाग हमरा देशक
सीमाना सँ
भाग गै महंगी भाग,
गै महंगी भाग।

41 वैष्णोदेवीक ढबकल नयना (2014)

ई की भेलइ ?
ई की एलइ ?
केसर कहबाक बाग
सेओ केर गाछी
धरतीक साक्षात् स्वर्ग पर
प्रकृति किअए वाम भेलइ !
अचंभित लोक
देखने नहि कहियो
एहन शोक तबाही,
ने एहन दहाड़ बाढ़ि
आ ने एहन बरबादी।
रहइ ने ककरो कहियो
एहन सपनहु मे आ ंका
प्रकृति लेतइ बदला
देतइ धोखा
आपदाक चरम पराकाष्ठा।
कियो ककरो सँ
पुछियो ने सकलइ
किअए एलइ एहन आफत
एहन विपत्ति
मेघो किअए
एना
बिगड़ि गेलइ।
हाक्रोश करइत
बूढ़–जुआन
अबोध नेन्ना
जम्मू कश्मीरक
समस्त परोपट्टा परगन्ना
क्षणहि मे
मटियामेट भेलइ
घर–दुआरि अंगना।
आशंकित लोक कें
इहो गेलइ बुझना
भरिसक दग्ध, वक्ष वैष्णोदेवीक
बहि गेल हो
दहो बहो नयना।

स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात्
जम्मू कश्मीरी
छद्म वेशी आतंकवादीक
सहइत आबि रहल अछि डंस
प्रकृतिक संग कयलक
खेलवाड़
जतय स्वयं के राखथि प्रकृति
बारहोमास सिंगारि।
ओतय होमय लागल
केसर कहबा
सेओक खेतीक बदला
बम, बारूद बन्दूकक उपजा
भरल सभहक
कथित लोकक
खरिहान अंगना।
एहि सँ दगध प्रकृति
दुःख सँ ढबकल नयना
दहकइत अंग, अंगारि
कतेदिन रखितथि
स्वयं के सम्हारि
मात्र दू ठोप नोर
आँखिक पोर सँ
ढबकल छलइ।
जाहि मे एहन
महाजल प्रलय
आबि गेलइ।
हिमराज फराके
भरि रहल छथि हुँकार
बन्नूक वारूद
बम बलास्ट सँ
हुनकहु अंग छनि
क्षत–विक्षत
छलनी तार–तार
जौं ओहो
संग धलितथि
तँSSS
कल्पना कयल जा सकइछ

आर केहन
महाविपत्ति
आबैत
पछिला साल
हुनक एकहि हुंकार पर
दरकि गेल छल
उतराखण्ड,
छिन्न–भिन्न खण्ड–खण्ड
महाप्रलय मे
मनुक्खक गेल
कतेको प्राण
प्रायः ओ
हृदय विदारक दृश्य
अवश्य हेतइक सकलके ज्ञात।
जेना
अन्नक संग
जाँत मे
घून पिसाइ छइ
तहिना
दोखीक संग
निरदोखियोक सिर
दोख लागि जाइत छइक
बखत एला पर
दूध–पानिक
जावत फरिछाउट होइछ
ताहि सँ पहिनहि
पानिक टघार
कपार सँ बहि गेल रहइछ,
प्रमाण समक्ष साक्षत्
लोक देखि रहल छइ
स्वयं संगहि भोगियो रहल छइ
प्रणम्य अछि
भारतीय सेनाक जवान
पाथरक बदलामे
देखेलक अपन
सहनशीलता समभाव
अपनत्वक देलक
सटीक प्रमाण
अपन प्राण
तरहत्थी पर राखि
बचेलक समस्त प्रभावित
जनताक प्राण।
भने जाति अलग हो
रीति रेवाज अलग हो
विपत्ति ककरो
कहि कें नहि अबइछ
मनुक्खताइक
असल पहचान
मनुक्खकें
एहने परिस्थिति मे
परखल जाइत छइ
हम सभ भारतवासी
एक छी एक रहब
सभहक सुख दुःख मे संग छी
संग रहब
दिवंगतक प्रति संवेदना
प्रभावितक प्रति
दैव सँ
हमरा सभ करी प्रार्थना
देथिन्ह साहस सहनशक्ति
समस्त जम्मू कश्मीरक जनता के
विपत्तिक मारल भोक्ता कें
हो पुनः स्वावलंबी
पुनः साकार हो
स्वर्णिम सपना
रोजगारक
अचल बुनियाद
नव जीवनकक शुरूआतक संभावना।
ऊँ शान्ति।
ऊँ शान्ति।।
ऊँ शान्ति।।।

42 सुनि बसंतक नाम

बहय पुरिवा वसात
गम गम रे वतास
सभ दिन भेल रात
चहु ओरि रे उल्लास
रवि होइत उत्तरार्ध
तम शिशिर पड़ायल
सुनि बसंतक नाम, मास फागुने रे नाम । बहय.....

महु फूल फूलि गेल,
कलि खिलि खिलि गेल,
आमु मोजरि रे गेल,
धरा सजि धजि गेल,
कलि तखन लजाएल
देखि मदन मताएल
सुनि वसंतक नाम, मास फागुने रे नाम । बहय.....

पीक अमुआक डारि
कुहु–कुहु रे पुकारि
परदेश पहुँ छारि
हाथे रंग पिचकारि,
खेलि पहुँ संग फाग
धनि भेली रे नेहाल,
सुनि बसंतक नाम, मास फागुने रे नाम । बहय.....

बाजय ढोल मिरदंग
मस्त भंग के तरंग
होरी खेलइ मे मतंग
रंग अबीरक संग,
बूढ़ नेन्ना रे जुआन
कत्ते करइ कूदफान,
सुनि बसंतक नाम, मास फागुने रे नाम । बहय.....

43 ऋतुराज बसंतक अभिनंदन

ऋतुराज बसंतक अभिनंदन,
फागुन सम वासर तम पावन
शिशिर समेटल भाभटपन,
मृदु ताप दिवाकर पड़ल जखन।
नभ चमकय चान सुधा बरिसय
देखु आइ प्रकृतिक आंगन मे। ऋतुराज.....

पतझड़ तरूवर नव–नव पल्लव,
पुष्पित कानन पीअर सरिसब,
अलमस्त बयार गम गम सौरभ,
खगवृन्द विहंग करय कलरब
कुहु–कुहु कोकिल कुहुकारि उठल,
देखु आइ प्रकृतिक आंगन मे। ऋतुराज.....

कत ढोल–झालि बाजत मृदंग,
कत घोरि गटागट पिबि भंग
नेन्ना जुआन मन मे तरंग
झूमि नाचि उठल मन मे उमंग
मिलि राग फाग सभ गाबि उठल
देखु आइ प्रकृतिक आंगन मे। ऋतुराज.....

अधखिल कली कसमस यौवन
कटिलचक बाट मदिरायल नयन
मदमस्त मदन झुमय कानन
अंगराइत कली गसि अलिंगन
कली भ्रमर मिलन अध चुमि उठल
देखु आइ प्रकृतिक आंगन मे। ऋतुराज.....

क्षिति लाले–लाल अंतरीक्ष लाल
चहु ओरि लाल होरिक धमाल
पहुँ संग अबीर हाथे गुलाल
धनि भेलि नेहाल अंग अंग लाल
सोहागिन सोहाग दमकि उठल
देखु आइ प्रकृतिक आंगन मे। ऋतुराज.....
होरि खेलथि राधा मोहन
सीता पति रघुकुलनंदन,
श्रृँगी–भृँगी संग मस्त मगन
कैलासक वासी उमारमण,
नटराजक डमरू डिमिक उठल,
देखु आइ प्रकृतिक आंगन मे। ऋतुराज.....

करजोरि बहोरि करत वंदन,
बसहु वसंत मही आंगन प्रांगन,
हे सृष्टिक मूल ऋतु पावन,
हे जीवक प्राणक संजीवन।
सामक वीणा झनकारि उठल
देखु आइ प्रकृतिक आंगन मे।
ऋतुराज बसंतक अभिनंदन–2
फागुन सम वासर पावन।

44 बसंतक ऋतु आबि गेल

अमुआक डारि ओट कोयलीक मन छोट
गुम–सुम, चुपे–चुप मन मे कोनो ने खोट,
कोयलीक चुप देखि पवन पुवरिया
कहि देल काने कोनो राज केर बतिया
कुहुक कोयली तखनहि बौराइ गेल
चहुँ दिसि उड़ि–उड़ि राज के प्रचारि देल
सभ जन–जन मे वन उपवन मे
आबि गेला पाहुन बसंत ऋतु..... आबि गेल।

सुनिके बसंत नाम योगी जी टोलीक संग
जड़वत् मनमा मे हो जेना उठल तरंग
साज करताल झालि ढोल मजीरा मृदंग
रगड़ि–रगड़ि घोरि पिबइ गट–गट भंग
मस्त मगन योगि गामे–गाम घुमि–घुमि,
डगर–डगर गली नाच करइ झूमि–झूमि
गाबि के जोगीड़ा योगी सभ के झुमाबइ योगी
फागुन प्रसंग मे जे
राग–फाग गाबि देल..... आबि गेल।

सुनि के बसंत नाम प्रकृति केलक सिंगार
कलि–कलि खिलि गेल, चम्पा जुही कचनार
महु फूल तूनि गेल, अमुओ मोजरि गेल
चहु दिसि गम–गम वातास जे गमकि गेल
मद मे मतल मधुकर चालि तलमल
देखिते कलिक तन हियरा मे हलचल
मिलइत नयन चारि, सभ रीति प्रति छाड़ि
चुमि लेल मुख कलि तखने लजाइ गेल..... आबि गेल।

विरहन धनिक पूरल मन कामना
फागुनक लाथ सोझहाँ मे देखि सजना
खेलइ होरि पहू संग–दुनु भेल लाले–लाल
धनिक चुनरि लाल अंग–अंग लाले–लाल
पूजथि बसंत के सोहागिन मोने मोन
हिया जे जुराइ देल हित नहि अहाँ सन
करजोरि पूनि–पूनि, अंचरा पसारि धनि
जनम–जनम के सोहाग भाग माँगि लेल..... आबि गेल।

45. बाप–पुरखाक नाम पर

आइ काल्हि,
बाप पुरखाक,
भाषा साहित्यक
नाम पर
नव–नव संस्था बनाकय
खूब लाम–काफ सजाकय
ताम झाम सँ
हुनक
श्राद्ध–बरखी, विभूति पर्व
मनाओल जाइत अछि
बाहरी आन–भाषाक
कथित नेता–अभिनेता अभिनेत्री
साहित्यकार कें
मुहल्लाक
दलाल चाटुकार कें
बजाओल जाइत अछि,
कराओल जाइत अछि
ओकरा सँ
हुनक, सारा/आदमकद
प्रस्तर मूर्ति पर,
पुष्पांजलि
पुष्पमाला
श्राद्धाँजली।
बेस नम्हर नम्हर
झूठ–मूठक भाषण
सजाओल चमचाक थोपड़ी
आ
बेस चहटगर भोजन।
प्रातः काल सँ
वैह सारा/प्रस्तर मूर्ति
भ' जाइत अछि
कौआक बैसकी
भरि साल माथ पर
करइत अछि, विष्ठा
महकइत परिसर
सगरे गंदगी
ठीके कहल गेल
छइ ई कहबी
लोक मे एखनो
प्रचलित छइ
गाम–गाम नगरी
जिबइत मे मारि–गारि
अन्नक बदला उकारी
मुइलाक बाद
हुनक नाम पर
महा–आडंबर
पंचदान, सर्वे श्राद्ध
नोतय, परोपट्टा
गाम–गाम जवारी
बाप–पुरखाक नाम पर
बेहरी–चंदा क
उगाही
करय जिनगी भरि मौज
कथित सपूत बेविचारी।

46. मनुक्खताइ

आजुक आधुनिकताक
युग मे मानव
बनि गेल अछि मशीन
मनुक्खताइक नाम सँ
फराक, बढ़ि गेल छइ
ओकर आवश्यकता
अंतहीन।
किछु पाओक लेल, लालसा मे
ओकर
कतेको किछु
छुटि जाइ छइ
सूदक लालसा मे
ओकर मूर तक
बुड़ि जाइछ छइ।
तराजूक दूहू पलड़ा जेकाँ
उपर नीचा होइत
भालड़ि सन भेल
जीनगी स्थिर
कहाँ भऽ पबइछ
गाछक शीश पर चतरल
हरियर रहितहुँ
अमरलत्ती जेकाँ सदा
अस्तित्व हीन
बनले रहइछ।
प्रसन्नता, आ हरख
ओकरा लग
फटकियो कँ
कहाँ अबैछ
कार कौआ जेकाँ
टाहि मारइत अपस्यांते
नित जीनगी बितबइछ।
तनिके किछु भेटलापर ओ
अहाँके नितराइछ
साओन भदवरिया
बेंग जेकाँ
चुरू भरि पानि पाबि
अपने मोने
टर्रराइछ।
निनानवेक चक्कर मे
ओझरालय हिया मे
नेहक फूल
कहाँ फुला पबइछ,
जलाशयक भ्रमजाल मे
ब्याकुल पियासल
मृग जेकाँ
घुरछाहि कटैछ।
मनुक्ख छी
मनुक्खताक जावत
ओकरा होइछ ज्ञान
ताहि सँ पहिनहि
ओकरा देह सँ
फराक भ'जाइछ प्राण।

47. हमरा देशक नेता

हमरा देशक नेता
होइ छथि महान।
हुनक दर्शन होइछ
हमरा पाँच बरखक बाद
जखन हिनका हम
पड़इ छियैन मोन।
आश्वासन सँ हमर
पाँच बरखक बाद
जखन हिनका हम
पड़इ छियैन मोन।
आश्वासन सँ हमर
भरि दइत छथि पेट मोन
बनाक' हवाईकिला
आलीशान मकान।
हमरा मुँह पर तत्खन
आबि जाइत अछि मुस्कान
हमर दुनु हाथ अनायासे
जुड़ि जाइत अछि
हिनका प्रति कृतज्ञता सम्मान।
हमर नेता हमरा लय
कतेक रहइ छथि फिरिसान
जखन अबइ छइ
कोनो तरहक प्राकृतिक आपदा
हिनका होइछन्हि प्रसन्नता
दाहड़, बाढ़ि सुखार लेल
मनबइत छथि भगवान सँ
मरय प्रभावित जनता
ओ जीबथि आन सँ।
हमरा देशक नेता कतेक भावुक
कतेक कर्त्तव्य परायण।
जखन दइ छथि
अपन जाँच प्रतिवेदन
बरबादीक सटीक आंकलन
तखन हिनक
देखल जाइत अछि ईमान
देखिक निश्चय लजा जाइछ बेइमान।
हमर देशक नेता
केहन छथि धर्मनिरपेक्ष
अपन जातिक लोक कँ
उकसा कऽ
आशा जातिक नाम पर
विभेद कराकँ
पहिनहि दंगा करबइ छथि
बादमे पंचइती करद छथि
जनताके मूर्ख बनबइ छथि।
एकरे नाम थिक
हिन्दुस्तान जतय मात्र
नेताटा होइ छथि महान।

48. आउ बंधु गाबि गीत

आउ बंधु गाबि गीत
रीत नव श्रृजन करी
नव सदी मे नवल प्रीत
जगत नव गठन करी आउ बंधु.....

जतय नेऽ कियो हीन हो,
कियो नेऽ शक्तिहीन हो,
मोन नेऽ मलीन हो,
आउ बंधु लगाके अंक
दुःख सभक हरण करी आउ बंधु.....

कियो नेऽ अछुत हो,
कतहु नेऽ छुआछुत हो,
समाज मजगूत हो,
लोक संयुक्त हो,
आउ बंधु कुरीति सभ
अगन मे दहन करी आउ बंधु.....

हरित तृण घास हो,
हरित गाछ पात हो,
स्वच्छ आकाश हो,
स्वच्छ वतास हो,
आउ बंधु शौरभित
डगर मे भ्रमण करी आउ बंधु.....

पूज्य मातृ भक्ति हो
पितर सदा तृप्त हो
माटिक प्रति भक्ति हो
आत्मबल शक्ति हो
आउ बंधु अपन माटि–पानि
के नमन करी आउ बंधु.....

49. सुलभ आन्दोलन

चलल आइ स्वच्छताक अभियान
स्वच्छ भारत के निर्माण।

देश मे सगर गंदगीक भरमार
रोग व्याधि सँ सभ लाचार
डेंगू, मलेरिया, कालाजार
मरय सभ कोटिक कोटि बिमार,
कोना के करत सभहक उपचार
देखि के फिरिसान सरकार
देलक आइ स्वच्छताक श्लोगन
स्वच्छ भारत के निर्माण.....

सदीबीस सत्तरि दशकक थिक बात,
गाँधीक स्वच्छ भारतक शुरुआत
हुनक एक सेवक लेलनि निज हाथ
डॉ0 बिन्देश्वर पाठक नाम विख्यात
ने कोनो भेद ने जातिपात
सभ के लय के संगहि साथ
सुलभ आन्दोलन प्राण प्रतिष्ठा स्वच्छ भारत के निर्माण...

घर–घर गाम–गाम शौचालय
शहर, नगर मे सगर शौचालय
पर्वत, विद्यालय देवालय
परिसर बाटिका कार्यालय
देश विदेश सगर शौचालय
स्वच्छताक प्रतिक शौचालय
सुलभ के करइ गुनगाण स्वच्छ भारत के निर्माण...

जातिक बन्हन छुआछुत
हरिजन वाल्मिक अछूत
सभ के अंग लेलनि लगाय
देशक जनगण के देलनि बुझाय
सत्य ई तनिको किछु नहि टाटक
जकर प्रणेता डॉ0 विन्देश्वर पाठक
हिनक संकल्प भेटल सम्मान
स्वच्छ भारत के निर्माण
सुलभ आन्दोलन के भेटल सम्मान
जय हो सुलभ इन्टरनेशनल संस्थान।...

कविक परिचय

नाम	:	श्री कामेश्वर झा
साहित्यिक नाम	:	श्री कामेश्वर झा "कमल" (कमल जी)
पिता	:	स्व0 दयानन्द झा
माता	:	स्व0 गुलाब देवी
जन्म	:	01 नवम्बर 1962
पैतृक	:	ग्रा0+पो0 – मिथिलादीप, थाना – मधेपुर, जिला – मधुबनी, मिथिला, (बिहार)
शिक्षा	:	अन्तर स्नातक (1982–1984)
पेशा	:	सामाजिक सेवा संस्थान सँ जुड़ल।
साहित्यिक विधा	:	गीत, कविता, कथा आदि।

संपर्क :

29 बी एण्ड सी स्कूल रो, भवानीपुर,

कोलकाता – 700 025

मोबाइल – 94344 85762

ज्ञानदीप प्रकाशन